वर्ष-10, अंक-21 पृष्ठ- 8, मूल्य : 02 रुपये

TM

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

प्रयागराज शुक्रवार, 22 मार्च, 2024

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

Adhunik Samachar

संक्षिप्त समाचार

सोनिया गांधी के दखल से बनी बात, बारपेटा सांसद खालिक ने बदला फैसला; वापस लिया कांग्रेस पार्टी से इस्तीफा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। मान-मनौवल के बाद कांग्रेस पार्टी से नाराज असम के बारपेटा से सांसद अब्दुल खालिक ने अपना इस्तीफा वापस ले लिया। कांग्रेस नेता ने बुधवार को पार्टी संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी से मुलाकात की।

इसके बाद उनका बयान सामने आया कि उन्हें सोनिया गांधी, पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और वायनाड सांसद राहुल गांधी पर पूरा भरोसा है। असम के बारपेटा से सांसद अब्दुल खालिक ने कांग्रेस पार्टी को दिया अपना इस्तीफा वापस ले लिया है। साथ ही उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और वायनाड सांसद राहुल गांधी के नेतृत्व पर भरोसा जताया। उन्होंने बुधवार को कांग्रेस संसदीय दल प्रमुख सोनिया गांधी से मुलाकात की थी। इस मुलाकात के बाद ऐसी संभावनाएं जताई जाने लगी कि अब्दुल खालिक अपना फैसला बदल सकते हैं। बारपेटा सांसद खालिक का कांग्रेस ने लोकसभा टिकट काट दिया। जिसके बाद उन्होंने शुक्रवार को पार्टी से इस्तीफा दे दिया। हालांकि, सोनिया गांधी से मुलाकात के बाद उनका एक बयान सामने आया जिसमें उन्होंने कांग्रेस नेताओं के प्रति अपना भरोसा जताया। उनके इस बयान के बाद संभावना जताई जाने लगी कि वह अपना फैसला बदल सकते हैं और उन्होंने शाम होते होते अपना इस्तीफा वापस ले लिया। अब्दुल खालिक ने कहा कि कांग्रेस को मजबूत करना समय की मांग है, इसलिए मैं अपना इस्तीफा वापस लेता हूं। साथ ही उन्होंने खरगे और राहुल के नेतृत्व में काम करने की इच्छा प्रकट की। कांग्रेस ने बारपेटा से मौजूदा सांसद अब्दुल खालिक का टिकट काट दिया और उनकी जगह पर दीप बायान को प्रत्याशी बनाया।

महाराष्ट्र में सुबह-सुबह लगे भूकंप के झटके, 10 मिनट में दो बार हिली धरती

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

हिंगोली। महाराष्ट्र के हिंगोली में सुबह लगभग 6 बजकर 8 मिनट पर भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए। रेक्टर स्केल पर भूकंप की तीव्रता 4.5 मापी गई। गौरतलब है कि 6 बजकर 19 मिनट पर एक बार फिर भूकंप के झटके महसस किए गए। इस बार भूकंप की तीव्रता 3.6 रही। इससे पहले अरुणाचल प्रदेश में दो घंटे के भीतर भूकंप के दो झटके महसूस किए गए। महाराष्ट्र के हिंगोली में सुबह लगभग 6 बजकर 8 मिनट पर भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए। रेक्टर स्केल पर भूकंप की तीव्रता 4.5 मापी गई। इससे पहले अरुणाचल प्रदेश में दो घंटे के भीतर भूकंप के दो झटके महसूस किए गए। नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी के अनुसार गुरुवार तड़के अरुणाचल प्रदेश में दो भूकंप आए. पहला भूकंप 3.7 तीव्रता का सुबह 0149 बजे आया।

वहीं, महाराष्ट्र के नांदेड़ और परभणी जिलों के कुछ हिस्सों में गुरुवार सुबह भूकंप के झटके महसूस किये गये। गनीमत रही कि भूकंप की वजह से किसी के हताहत होने की खबर सामने नहीं आई। नांदेड़ में शहर के कुछ इलाकों और जिले के अर्धपुर, मुदखेड, नायगांव, देगलुर और बिलोली तालुका में झटके महसूस किए गए। नेशनल सेंटर फॉर सीस्मोलॉजी के अनुसार, गुरुवार तड़के अरुणाचल प्रदेश में दो भूकंप आए. पहला भूकंप 3.7 तीव्रता का सुबह 01:49 बजे आया। भूकंप का केंद्र 10 किलोमीटर की गहराई में अक्षांश 27.38 और देशांतर 92.77 पर स्थित था।

फेडरल रिजर्व ने ब्याज दरों में नहीं किया बदलाव, 2024 में 3 कटौती का जताया अनुमान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। अमेरिका के फेडरल रिजर्व की दो दिवसीय फेडरल ओपन मार्केट कमेटी की बैठक हुई थी। इस बैठक में ब्याज दरों को लेकर कई फैसले लिये गए हैं। अमेरिका के फेडरल रिजर्व ने ब्याज दरों में कोई बदलाव नहीं किया है। फेड रिजर्व ने अपनी पॉलिसी समीक्षा बैठक में यह फैसला लिया है। हालांकि उन्होंने 2024 के अंत तक में 3 कटौती का अनुमान जताया है। फेड ने ब्याज दरों को 5.25 से 5.50 फीसदी पर स्थिर रखने का फैसला लिया है। पढ़ें पूरी खबर आज फेड रिजर्व ने बताया कि उन्होंने सर्वसम्मति के साथ बेंचमार्क ब्याज दरों को स्थिर रखने का फैसला लिया है। इसका मतलब है कि ब्याज दर 5.25 से 5.50 फीसदी पर स्थिर रहेगी।बता दें कि अमेरिका के केंद्रीय बैंक ने जुलाई से प्रमुख ब्याज दरों को 23 वर्ष के उच्चतम स्थिर पर बनाए रखा है। हालांकि फेड मे उम्मीद जताई है कि 2024 के अंत में ब्याज दरों में 3 बार कटौती की जा सकती है। फेडरल रिजर्व के अध्यक्ष जेरोम पॉवेल ने कहा कि हालिया महंगाई दर की वजह से ब्याज दर में कोई बदलाव नहीं किया गया है। हालांकि, केंद्रीय बैंक साल के अंक में तीन ब्याज दरों में कटौती कर सकता है।

असम के मूल निवासियों पर सीएए का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा', सर्वानंद सोनोवाल ने लोकसभा चुनाव को लेकर किया ये दावा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

गुवाहाटी। केंद्रीय मंत्री सर्वानंद सोनोवाल ने कहा कि नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) का असम के मूल निवासियों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा और लोकसभा चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) राज्य की 14 में से 12 सीट पर जीत दर्ज करेगा। केंद्रीय मंत्री सर्वानंद सोनोवाल ने कहा कि नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) का असम के मूल निवासियों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा और लोकसभा चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) राज्य की 14 में से 12 सीट पर जीत दर्ज करेगा। कहा कि असमवासी अब अच्छी तरह से संरक्षित और सुरक्षित हैं क्योंकि पिछले 10 वर्षों में भाजपा सरकार ने उन मूल जातीय लोगों को पट्टा अधिकार दिए हैं। उन्होंने कहा कि असम वासी अब अच्छी तरह से संरक्षित और सुरक्षित हैं, क्योंकि पिछले 10 वर्षों में भाजपा सरकार ने उन मूल जातीय लोगों को पट्टा (भूमि अधिकार), भूमि दस्तावेज दिए हैं जिनके पास पहले भूमि नहीं थी। केंद्रीय मंत्री ने बुधवार को एक इंटरव्यू में दावा किया कि लोकसभा चुनाव में वह राजग के लिए 12 से ज्यादा सीटों की उम्मीद कर रहे हैं। भाजपा ने असम की 14 में से 11 सीट पर अपने उम्मीदवार खड़े किए हैं जबकि सहयोगी असम गण परिषद ने दो सीट पर और यूपीपीएल ने एक सीट पर उम्मीदवार उतारा है। उन्होंने कहा कि रद किया अवैध प्रवासी (ट्रिब्यूनल द्वारा निर्धारण) अधिनियम 1983 कांग्रेस सरकार का थोपा घातक व भेदभावपूर्ण कानून था। अगर सुप्रीम कोर्ट इसे रद नहीं करता तो कोई संदिग्ध विदेशी नहीं पकड़ा जाता।

रविवार 31 मार्च को भी खुले रहेंगे बैंक, आरबीआई ने जारी किए निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। 31 मार्च रविवार का दिन है लेकिन इस दिन भी देश में बैंकों की शाखाएं खुली रहेंगी।

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने बैंकों को 31 मार्च को सरकारी कामकाज के लिए शाखाएं खोलने का निर्देश दिया है। बता दें कि 31 मार्च चालू वित्त वर्ष का अंतिम दिन है। आरबीआई ने बयान जारी कर कहा भारत सरकार ने सरकारी प्राप्तियों और भुगतान से संबंधित बैंकों की सभी शाखाओं को 31 मार्च 2024 (रविवार) को लेनदेन के लिए खुला रखने का अनुरोध किया है ताकि वित्त वर्ष 2023-24 में प्राप्तियों और भुगतान से संबंधित सभी सरकारी लेनदेन का हिसाब रखा जा सके। इससे पहले आयकर विभाग भी लॉन्ग वीकेंड की छुट्टियां रद्द कर चुका है। आरबीआई ने बयान जारी कर कहा, ङ्घभारत सरकार ने सरकारी प्राप्तियों और भुगतान से संबंधित बैंकों की सभी शाखाओं को 31 मार्च, 2024 (रविवार) को लेनदेन के लिए खुला रखने का अनुरोध किया है ताकि वित्त वर्ष 2023-24 में प्राप्तियों और भुगतान से संबंधित सभी सरकारी लेनदेन का हिसाब रखा जा सके।

लोकसभा चुनाव के पहले चरण की 102 सीटों के लिए नामांकन प्रक्रिया शुरू, 21 राज्यों में 19 अप्रैल को होगा मतदान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव के पहले चरण की 102 सीटों के लिए बुधवार को नामांकन प्रक्रिया शुरू हो गई है। पहले चरण में 21 राज्यों में 19 अप्रैल को मतदान होगा। लोकसभा चुनाव के पहले चरण की 102 सीटों के लिए बुधवार को नामांकन प्रक्रिया शुरू हो गई है। पहले चरण में 21 राज्यों में 19 अप्रैल को मतदान होगा। बिहार में पहले चरण में होने वाले चुनाव के लिए नामांकन दाखिल करने की आखिरी तारीख 28 मार्च है। बिहार की 40 में से चार सीटों पर पहले चरण में मतदान होगा। राष्ट्रपति की ओर से चुनाव आयोग द्वारा जारी अधिसूचना के मुताबिक, नामांकन पत्र दाखिल करने की आखिरी तारीख 27 मार्च है। पहले चरण में जिन राज्यों में मतदान होगा उनमें अरुणाचल प्रदेश, असम, बिहार, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, बंगाल, जम्मू-कश्मीर, लक्षद्वीप और पुडुचेरी शामिल हैं। बिहार में पहले चरण में होने वाले चुनाव के लिए नामांकन दाखिल करने की आखिरी तारीख 28 मार्च है। बिहार की 40 में से चार सीटों पर पहले चरण में मतदान होगा। नामांकन पत्रों की जांच 28 मार्च को की जाएगी। बिहार के लिए यह 30 मार्च को की जाएगी। पहले चरण के लिए चार संसदीय सीटों पर नामांकन की अधिसूचना जारी हो गई। अधिसूचना जारी होने के बाद पहले चरण वाले चार लोकसभा क्षेत्र में पहले दिन किसी अभ्यर्थी ने नामांकन नहीं किया। पहले चरण में नामांकन की अंतिम तिथि 28 मार्च है। चारों लोकसभा सीटों पर पहले चरण में 19 अप्रैल को मतदान की तिथि तय है। मध्य प्रदेश में पहले चरण के लिए तीन प्रत्याशियों ने नामांकन किया। पहले दिन सीधी और शहडोल सीटों के लिए नामांकन पत्र जमा किए गए। वहीं, उत्तराखंड में पहले दिन कोई नामांकन नहीं हुआ। पांच लोकसभा सीटों के लिए 43 नामांकन पत्रों की बिक्री हुई। जम्मू-कश्मीर की ऊधमपुर-डोडा-कठुआ लोकसभा सीट के लिए पहले दिन कोई प्रत्याशी नामांकन करने नहीं पहुंचा।

आतंकी संगठन आइएस का भारत प्रमुख अपने सहयोगी के साथ गिरफ्तार, बांग्लादेश से सीमा पार कर असम पहुंचे थे दोनों आतंकी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

गुवाहाटी। आतंकी संगठन आइएस के भारत प्रमुख और उसके एक सहयोगी को बुधवार को असम के धुबरी जिले में गिरफ्तार कर लिया गया। ये दोनों आतंकी बांग्लादेश से सीमा पार करने के बाद यहां आए थे। इस संबंध में असम पुलिस के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी प्रणब ज्योति गोस्वामी ने कहा कि एक गुप्त सूचना के बाद एसटीएफ द्वारा इन्हें धर्मशाला क्षेत्र से गिरफ्तार किया गया। आतंकी संगठन आइएस के भारत प्रमुख और उसके एक सहयोगी को बुधवार को असम के धुबरी जिले में गिरफ्तार कर लिया गया। ये दोनों आतंकी बांग्लादेश से सीमा पार करने के बाद यहां आए थे। इस संबंध में असम पुलिस के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी प्रणब ज्योति गोस्वामी ने कहा कि एक गुप्त सूचना के बाद एसटीएफ द्वारा इन्हें धर्मशाला क्षेत्र से गिरफ्तार किया गया। उन्होंने बताया कि बाद में दोनों को गुवाहाटी स्थित एसटीएफ कार्यालय लाया गया। उन्होंने कहा कि दोनों की पहचान हो गई है। जांच में पता चला है कि गिरफ्तार हरीश फारूकी उर्फ हरीश अजमल फारूकी भारत में आइएस का प्रमुख है। वह देहरादून के चकराता का रहने वाला है। उसका सहयोगी अनुराग सिंह मतांतरण कर अब रेहान हो गया है। वह पानीपत का रहने वाला है। इसकी पत्नी बांग्लादेशी नागरिक है। ये दोनों भारत में आइएस के प्रशिक्षित सदस्य है। ये दोनों भारत में आइएस के आतंकी एजेंडे को आगे बढ़ा रहे थे। ये आइएस के लिए फंडिंग से लेकर आतंकी घटनाओं को अंजाम देने की साजिश में शामिल बताए गए है। एक पुलिस अधिकारी ने कहा कि ये एनआइए और एटीएस के रडार पर थे। इनके विरुद्ध दिल्ली, लखनऊ सहित अन्य स्थानों पर कई मामले लंबित है। उन्होंने कहा कि आगे की कानूनी कार्रवाई करने के लिए आरोपितों को एनआइए को सौंपा जाएगा।इस कार्रवाई पर मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने गुरुवार को प्रतिक्रिया दी।असम पुलिस के एक ट्वीट पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए, सीएम बिस्वा ने कहा, ठमाननीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हम कट्टरपंथियों के खिलाफ अपनी लड़ाई जारी रखेंगे और अपने देश की धरती से आतंकवाद को खत्म करेंगे।

पुतिन व जेलेंस्की को भरोसा कि मोदी फिर बनेंगे पीएम, दोनों राष्ट्रपतियों ने चुनाव बाद आने का दिया न्योता

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध थमने का नाम नहीं ले रहा। इनके बीच शांति स्थापित करने की हर कोशिश नाकाम हो रही है, लेकिन दोनों देशों के राष्ट्रपति कम से कम इस बात पर राजी है कि भारत में होने वाले आगामी चुनाव में पीएम नरेन्द्र मोदी एक बार फिर विजयी होंगे और वह चुनाव बाद नई सरकार बनाने में सफल होंगे। तभी बुधवार को जब पीएम मोदी ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और वोलोदिमीर जेलेंस्की से टेलीफोन पर बात की, तो दोनों नेताओं ने मोदी को चुनाव बाद अपने अपने देश की यात्रा पर आने के लिए आमंत्रित किया। पीएम मोदी ने रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और वोलोदिमीर जेलेंस्की से टेलीफोन पर बात की तो दोनों नेताओं ने मोदी को चुनाव बाद अपने अपने देश की यात्रा पर आने के लिए आमंत्रित किया। राष्ट्रपति पुतिन और पीएम मोदी के बीच इस बात की सहमति बनी की कि वह भारत व रूस के विशेष रणनीतिक रिश्ते को और ज्यादा प्रगाढ़ बनाएंगे। पुतिन इसी रविवार को हुए चुनाव में विजयी हुए है और छह वर्षों के लिए फिर से रूस के राष्ट्रपति बने हैं। पीएम मोदी ने एक ही दिन में रूस और यूक्रेन के राष्ट्रपतियों से बात करके यह भी स्पष्ट कर दिया है कि वह वैश्विक मंच पर अपनी अलग व स्वतंत्र कूटनीति को लेकर प्रतिबद्ध है। एक तरफ अमेरिका व यूरोपीय देशों के विरोध के बावजूद रूस के साथ संपर्क में है, जबकि रूस के विरोध के बावजूद यूक्रेन के साथ संपर्क कायम रखे हुए है और उसे मदद भी भेजता रहा है। राष्ट्रपति पुतिन और पीएम मोदी के बीच इस बात की सहमति बनी की कि वह भारत व रूस के विशेष रणनीतिक रिश्ते को और ज्यादा प्रगाढ़ बनाएंगे। साथ ही दोनों नेताओं ने मौजूदा द्विपक्षीय रिश्तों के विभिनन आयामों की भी समीक्षा की, क्षेत्रीय व वैश्विक हालातों पर भी चर्चा हुई। यूक्रेन-रूस युद्ध पर पीएम मोदी ने भारत के पुराने रूख को दोहराया कि इस विवाद का समाधान कूटनीति व वार्ता से ही हो सकती है। विदेश मंत्रालय ने बताया है कि पीएम मोदी ने राष्ट्रपति पुतिन को चुनाव में विजयी होने पर बधाई दी और रूस की जनता के लिए शांति, प्रगति व संपनन्ता की कामना की। दोनों नेताओं के बीच सहमति बनी की रूस व भारत की मौजूदा रिश्तों को और ज्यादा प्रगाढ़ किया जाएगा। रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत बनाने के लिए दोनों नेता आने वाले वर्षों में ज्यादा से ज्यादा प्रयास करेंगे। दोनों नेताओं ने आगे भी संवाद जारी रखने की बात कही है। जेलेंस्की से हुई वार्ता के बाद मोदी ने सोशल मीडिया साइट एक्स पर लिखा है, सनद रहे कि भारत रूस और यूक्रेन के बीच लगातार सामंजस्य बनाने की रणनीति पर आगे बढ़ रहा है। पिछले वर्ष जापान में जी-7 संगठन की शीर्षस्तरीय बैठक के दौरान पीएम मोदी और जेलेंस्की के बीच उच्चस्तरीय वार्ता भी हुई थी।

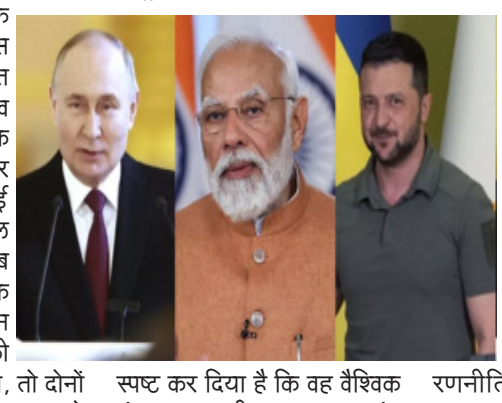

अन्नाद्रमुक और डीएमके के बीच हुआ डील फाइनल, लोकसभा चुनाव के लिये पार्टियों में सीट बंटवारे को लेकर बनी बात

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

चेन्नई। तमिलनाडु की मुख्य विपक्षी पार्टी अननद्रमुक ने बुधवार को डीएमडीके के साथ लोकसभा चुनाव के लिए सीटों के बंटवारे को अंतिम रूप दे दिया। महासचिव एडप्पादी पलानीस्वामी और महासचिव प्रेमलता विजयकांत ने लोकसभा चुनाव के लिए गठबंधन को लेकर हाथ मिलाया है। मिलनाडु की मुख्य विपक्षी पार्टी अननद्रमुक ने बुधवार को डीएमडीके के साथ लोकसभा चुनाव के लिए सीटों के बंटवारे को अंतिम रूप दे दिया। महासचिव एडप्पादी पलानीस्वामी और महासचिव प्रेमलता विजयकांत ने लोकसभा चुनाव के लिए गठबंधन को लेकर हाथ मिलाया है। एआईएडीएमके महासचिव एडप्पादी पलानीस्वामी कहते हैं हम इस संसदीय चुनाव का सामना एक साथ करने जा रहे एआईएडीएमके महासचिव एडप्पादी पलानीस्वामी कहते हैं, ''हम इस संसदीय चुनाव का सामना एक साथ करने जा रहे हैं। अश्अख् को कुल 5 निर्वाचन क्षेत्र आवंटित किए गए हैं। ये हैं तंजावुर, विरुधुनगर, तिरुवल्लूर, सेंट्रल चेनन्ई और कुड्डालोर तमिलनाडु के मुख्य विपक्षी दल अननद्रमुक ने बुधवार को लोकसभा की सीटों पर सहयोगी दल डीएमडीके और पुथिया तमिलागम के साथ समझौता कर लिया है। वहीं, सत्तारूढ़ द्रमुक ने 19 अप्रैल को होने वाले मतदान में अपने 21 लोकसभा सीटों के लिए उम्मीदवारों की सूची जारी कर दी है। द्रमुक ने सांसद कनिमोरी, टीआर बालू और ए.राजा की सीट समेत कई सीटें बरकरार रखी हैं। जबकि अन्य 18 सीटों को द्रमुक ने अपने सहयोगी दलों कांग्रेस, वाम दलों और वीसीके व अन्य को दे दी है। अननद्रमुक के पार्टी मुख्यालय में सीटों पर समझौते की घोषणा करते हुए बुधवार को पार्टी महासचिव इड्डापड्डी के.पलानीस्वामी ने कहा कि डीएमडीके को तिरुवल्लुर (सुरक्षित), सेंट्रल चेनन्ई, कुड्डालोर, तंजावुर और विरुद्धनगर लोकसभा संसदीय सीटों पर चुनाव लड़ने का अवसर मिलेगा। जबकि पुथिया तमिलागम को तेनकसी और डडीगुल क्षेत्र की सीटें मिली हैं। इस चुनावी समझौते पर डीएमडीके के महासचिव प्रेमलता विजयकांत और पीटी के प्रमुख के.कृष्णसामी ने किए हैं।दूसरी ओर, तमिलनाडु के सत्तारूढ़ दल द्रमुक 21 सीटों पर उम्मीदवारों की सूची जारी करते हुए कहा कि पार्टी ने अपना घोषणापत्र भी जारी कर दिया है।

नेहरू काल को बेहतर मानने के विचार से निकलना होगा बाहर', जयशंकर बोले- शुरुआती वर्षों में विदेश नीति बस नेहरूवादी विचारधारा का बुलबुला

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने बुधवार को नेहरू सरकार द्वारा लिए गए कुछ प्रमुख निणर्यों की आलोचना करते हुए कहा कि लोगों को इस मानसिकता से बाहर निकलने की जरूरत है कि 1946 से बाद की अवधि 'महान वर्ष' थे और तब देश ने 'शानदार' प्रदर्शन किया था। आजादी के बाद शुरुआती वर्षों में सरकार की विदेश नीति के बारे में जयशंकर ने कहा- आपने पाकिस्तान को गलत पाया, आपने चीन को गलत पाया, आपने अमेरिका को सही पाया और कहा गया कि हमारी विदेश नीति बहुत अच्छी है। आजादी के बाद शुरुआती वर्षों में सरकार की विदेश नीति के बारे में जयशंकर ने कहा-आपने पाकिस्तान को गलत पायाआपने चीन को गलत पाया आपने अमेरिका को सही पाया और कहा गया कि हमारी विदेश नीति बहुत अच्छी है। इसलिएअब इस नजरिये को एक तरफ रख दीजिए। उन्होंने कहा कि शुरुआती वर्षों में जब विदेश नीति की बात आती थी तो यह काफी हद तक नेहरूवादी विचारधारा का बुलबुला था। इसलिए, अब इस नजरिये को एक तरफ रख दीजिए। न्यूज18 राइजिंग भारत समिट में एक सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि शुरुआती वर्षों में जब विदेश नीति की बात आती थी तो यह काफी हद तक नेहरूवादी विचारधारा का बुलबुला था।

डीजल-पेट्रोल में पानी मिलाने पर पेट्रोल पंप पर हंगामा, अधिकारियों ने पहुंचकर लिया नमूना

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
प्रयागराज। पेट्रोल-डीजल में पानी मिलाकर बेचने की शिकायत पर बृहस्पतिवार को जमकर हंगामा हुआ। मामला सिविल लाइंस सुभाष चौराहे पर स्थित पेट्रोल पंप का है। अधिवक्ता के साथ पहुंचे लोगों ने प्रदर्शन किया और टंकी को सीज करने की मांग की। मौके पर पुलिस भी पहुंच गई। अधिकारियों ने जांच के लिए सैंपल लिया तो उसमें पानी पाया गया। सुभाष चौराहे पर स्थित पेट्रोल पंप पर बृहस्पतिवार को जमकर हंगामा हुआ। ग्राहकों ने पेट्रोल और डीजल में पानी मिलाकर बेचने का आरोप लगाते हुए हंगामा किया। जानकारी मिलते ही आपूर्ति विभाग के अधिकारियों के साथ पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। अधिकारियों ने भीड़ के सामने पैमाने में डीजल भरा तो एक लीटर डीजल में करीब 200 ग्राम पानी पाया गया। पेट्रोल पंप के संचालक का कहना था कि इंडियन आयल ही पानी मिलाकर आपूर्ति कर रहा है। अधिवक्ता संदीप मिश्रा ने बताया कि कल रात वह अपनी कार में इसी टंकी से डीजल भरवाकर प्रतापगढ़ गए थे। प्रतापगढ़ पहुंचकर उनकी गाड़ी बंद हो गई और फिर स्टार्ट नहीं हुई। जिस पर उन्हें तेल में मिलावट का शक हुआ। बृहस्पतिवार को वह कई गाड़ियों में इसी टंकी से तेल भरवाया और सुभाष चौराहे पर ही चक्कर लगा रहे थे कि गाड़ी बंद हो गई। मिस्त्री बुलाकर जब चेक कराया तो पता चला कि टंकी में पानी होने के कारण गाड़ी बंद हो गई।सिविल लाइन चौराहे पर इंडियन ऑयल पेट्रोल पंप से डीजल में पानी के मिलावटी का मामला सामने आया है। एक व्यक्ति अपने दो आर्टिगा कार में डीजल भरवा कर थोड़ी दूर गया। उसके बाद दोनों ही कारें बंद हो गई। मिस्त्री बुलवाकर टंकी खुलवाया तो उसमें से पानी निकला। भुगतभोगी व्यक्ति पेट्रोल सील करने की मांग को लेकर पंप पर ही धरना देकर बैठ गया है । प्रयागराज निवासी संदीप मिश्रा एडवोकेट ने बताया कि सिविल लाइंस इंडियल ऑयल पेट्रोल पंप से वह हमेशा तेल भराता था। दो दिन पहले भी वह यहीं से डीजल डलवाकर प्रतापगढ़ गया था। वहां पर मेरी कार बंद हो गई। इस मामले में वह सिविल लाइंस चौकी इंचार्ज से शिकायत किया था, लेकिन उन्होंने कोई संज्ञान नहीं लिया। बृहस्पतिवार मैं जब फिर अपनी दो आर्टिगा गाड़ी में इस पेट्रोल पंप से डीजल डलवाकर कर आगे गया तो कुछ दूर जाने के बाद मेरी दोनों गाड़ियां बंद हो गईं मैंने मिस्त्री बुलवाकर टंकी को खुलवाया तो उसने बताया इसमें तो पानी मिला है। उसके बाद मैं टंकी मालिक को फोन किया तो उन्होंने इस बात को स्वीकार किया, लेकिन उन्होंने ने कहा कि यह पानी मैं नहीं डीजल टैंकर वाले पहले से ही मिलाकर देते हैं। संदीप पेशे से अधिवक्ता हैं। वह मौके पर दर्जनों लोगों को लेकर पेट्रोल पंप सील करवाने के लिए पंप पर ही बैठकर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं।

आग में झोंकने से पहले बहू के घरवालों ने पटरे से की पिटाई, चिल्लाते रहे पति-पत्नी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
प्रयागराज। घटना के कई वीडियो वायरल हो रहे हैं। वीडियो में कुछ महिलाएं भी दिखती हैं। उनके हाथों में भी पटरे दिखाई देते हैं। पांच वीडियो एक के बाद एक वायरल किए गए। इन्हें किसी ने घर के भीतर से ही मोबाइल फोन से बनाया हुआ मालूम पड़ता है। घटना के कई वीडियो वायरल हो रहे हैं। वीडियो में कुछ महिलाएं भी दिखती हैं। उनके हाथों में भी पटरे दिखाई देते हैं। पांच वीडियो एक के बाद एक वायरल किए गए। इन्हें किसी ने घर के भीतर से ही मोबाइल फोन से बनाया हुआ मालूम पड़ता है पांच वीडियो एक के बाद एक वायरल किए गए। इन्हें किसी ने घर के भीतर से ही मोबाइल फोन से बनाया हुआ मालूम पड़ता है। वीडियो घर में आग लगाने से ठीक पहले के हैं। इसमें कई लोग टिंबर व्यवसायी राजेंद्र केशरवानी व उनकी पत्नी शोभा देवी को पटरे से पीटते और गालीगलौज करते नजर आ रहे हैं। इनमें से दो वीडियो 30 व 32 सेकेंड के हैं, जबकि अन्य 10 सेकेंड से भी कम अवधि के हैं। वीडियो बताते हैं कि बेटी अंशिका के सुसाइड करने की सूचना पाकर मायके पक्ष के लोग किस इरादे से बेटी की ससुराल पहुंचे और आगे दिल दहला देने वाली एक दूसरी वारदात को अंजाम दे डाला। वीडियो में दिखता है कि घर में टिंबर व्यवसायी के बहू पक्ष के लोग घर में घुस रहे हैं। इनके हाथों में लकड़ी के पटरे हैं। कुछ देर बाद वह इन्हीं पटरों से व्यवसायी को पीटने लगते हैं। इस दौरान वह लगातार गालियां भी देते रहते हैं ।वीडियो में कुछ महिलाएं भी दिखती हैं। उनके हाथों में भी पटरे दिखाई देते हैं। वीडियो से ही खुलासा हुआ कि घटना के वक्त टिंबर व्यवसायी के भाई राजेश और उनका बेटा भी वहां मौजूद था।

जमीन दिलाने के नाम पर सीआरपीएफ जवान के साथ जालसाजी, सीएम से की शिकायत- केस दर्ज

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सहबाजगंज । वर्ष 2023 में एसएसपी ऑफिस के पास एक चाय की दुकान पर तीनों आरोपी रुपए वापस करने किए लिए मीटिंग रखे और तीन चेक दिए, जो बाउंस कर गया। जवान छः वर्षों से चक्कर काटते काटते जब थक गया तो मुख्यमंत्री से शिकायत की। केंद्रीय मंत्री संजीव बालियान के सुरक्षा में तैनात सीआरपीएफ जवान से जमीन दिलाने के नाम पर जालसाजों ने 18.5 लाख रूपए हड़प लिए। लगभग छह वर्षों तक टाल-मटोल करने के बाद जब रुपये वापस नहीं मिले तो जवान ने मुख्यमंत्री से शिकायत कर दी। इसके बाद गुलरिहा थाने की पुलिस ने मामले में केस दर्ज जांच शुरू कर दी। मिली जानकारी के अनुसार पिपराइच थाना क्षेत्र के महुआचाफी गांव निवासी अनिरुद्ध कुमार गुप्ता सीआरपीएफ में जवान हैं और केंद्रीय मंत्री पशुपालन एवं मत्स्य पालन उद्योग संजीव बालियान की सुरक्षा में तैनात हैं। जवान 2017 में जमीन ढूंढ रहे थे कि इसी दौरान गुलरिहा थाना क्षेत्र के बनगाई निवासी खुर्शीद आलम और अर्जुन राय और अभिषेक श्रीवास्तव से मुलाकात हो गई। तीनों ने जमीन दिलाने की बात कहते हुए महराजगंज के श्यामदेरवा में जमीन दिखाया और साढ़े आठ डिसमिल जमीन का दाम तय कर दिया। खुर्शीद आलम ने शिवपुर सहबाजगंज स्थित एसबीआई बैंक खाते में 8.5 लाख रुपया ले लिए और जब जवान जमीन के बैनामे के लिए खुर्शीद से संपर्क करता तो विवादित जमीन बोलकर टाल मटोल शुरू कर दिया। दबाव बनाने पर अर्जुन राय ने चिलुआताल क्षेत्र के जीतपुर में जमीन दिलाने के नामपर अपने खाते में 10 लाख और जवान से ले लिए। उसके बाद से जवान ने तीनों लोगों से जमीन की रजिस्ट्री कराने की बात कई बार कहीं तो उन लोगों ने फिर से हीला हवाली करने लगे तथा ज्यादा दबाव बनाने पर तीनों आरोपी जवान को धमकी देने लगे। वर्ष 2023 में एसएसपी ऑफिस के पास एक चाय की दुकान पर तीनों रुपए वापस करने की मीटिंग रखे और तीन चेक दिए, जो बाउंस कर गया। जवान छः वर्षों से चक्कर काटते काटते जब थक गया तो मुख्यमंत्री से शिकायत की। गुलरिहा पुलिस ने सीआरपीएफ जवान की तहरीर पर खुर्शीद आलम, अर्जुन राय और अभिषेक श्रीवास्तव के खिलाफ धारा 420, 406, 506 आईपीसी के तहत केस दर्ज कर मामले की जांच कर रही है।

सोनेलाल पटेल की कर्मभूमि पर पत्नी ने लिया ये बड़ा फैसला, सपा की बढ़ीं मुश्किलें

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
प्रयागराज। सोनेलाल पटेल की कर्मभूमि पर पत्नी ने लिया ये बड़ा फैसला, सपा की बढ़ीं मुश्किलेंअपना दल के संस्थापक स्व. डॉ. सोनेलाल पटेल की कर्मभूमि रही फूलपुर और पड़ोसी कौशाम्बी लोकसभा सीट से अपना दल कमेरावादी के प्रत्याशी उतारने की घोषणा से समाजवादी पार्टी के नेताओं को बड़ा झटका लग सकता है। इससे इंडिया गठबंधन के मतों का बिखराव होगा और सीधा फायदा भाजपा को ही मिलना है। वैसे, इन दोनों सीटों पर फिलहाल भाजपा ही काबिज है।बसपा से अलग होकर 1995 में अपना दल गठित करके डॉ. सोने लाल पटेल ने फूलपुर को ही कर्मस्थली बनाया था। यहीं से वह 1996 से 2009 तक पांच बार लोकसभा चुनाव लड़े, पर जीत नहीं पाए। पहली बार सिर्फ 2426 वोट ही पा सके थे। धीरे-धीरे पकड़ मजबूत हुई और 1998 के चुनाव में उन्हें 42152, फिर 1999 में 127780 मत हासिल हुए। वहीं, 2004 में 80388 तो 2009 में 76699 मत प्राप्त हुए थे। वर्ष 2009 में कानपुर में एक सड़क हादसे में निधन के बाद पार्टी की कमान पत्नी कृष्णा पटेल के हाथों में आ गई। बड़ी बेटी पल्लवी पटेल और छोटी अनुप्रिया पटेल भी साथ थीं। 2014 में भाजपा से गठबंधन के बाद अनुप्रिया न सिर्फ मिर्जापुर से सांसद चुनी गईं, बल्कि केंद्र में मंत्री पद से भी नवाजी गईं। फिर, सियासी महत्वाकांक्षाओं की रस्साकशी शुरू हुई और दोनों बेटियों की राहें जुदा हो गईं। मां के साथ बड़ी बहन पल्लवी पटेल हैं। उनके अपना दल कमेरावादी ने 2019 में कांग्रेस से गठबंधन किया। पल्लवी के पति पंकज पटेल निरंजन फूलपुर से कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़े। उन्हें सिर्फ 3.35 प्रतिशत वोट नसीब हुए। बताते हैं कि इस बार कृष्णा पटेल खुद चुनाव लड़ना चाहती हैं।करीब 20.47 लाख वोटर वाली फूलपुर सीट पर सर्वाधिक चार लाख पटेल मतदाता हैं। कृष्णा पटेल कुर्मियों के साथ करीब दो लाख यादव और इतने ही मुस्लिम मतों के गठजोड़ से जिताऊ समीकरण बनते देख रही हैं। हालांकि, कागज पर दिखने वाला यह समीकरण इतना सरल भी नहीं है। अभी यहां से मजबूत सामाजिक पकड़ रखने वाली भाजपा की केशरी देवी पटेल सांसद हैं। इन्हें आजादी के बाद अब तक हुए चुनावों में से सबसे ज्यादा (5.44 लाख) वोट हासिल हुए हैं। वहीं, सियासी गलियारों में यह भी जोरदार चर्चा है कि अनुप्रिया ने भाजपा से फूलपुर सीट भी मांगी है।हालांकि, भाजपा ने अभी न प्रत्याशी घोषित किया, न ही सीट पर स्थिति स्पष्ट की है। अगर कृष्णा पटेल यहां से अकेले चुनाव लड़ती हैं तो सपा प्रत्याशी को ही नुकसान उठाना पड़ सकता है।कौशाम्बी लोकसभा सीट (सुरक्षित) पर कौशाम्बी जिले की तीनों विस सीटों पर सपा का कब्जा है, जबकि प्रतापगढ़ की दो विधानसभा क्षेत्र (कुंडा व बाबागंज) राजा भैया के जनसत्ता दल (लोकतांत्रिक) के पास हैं।

आधुनिक
गेस्ट हाउस
- वाटर प्रूफ शेड
- पार्किंग की सुविधा
- मन्दिर की सुविधा
- सी.सी.टीवी.
- छोटे-बड़े कार्यक्रमों के अलग-अलग रेट
- 45000 sq. feet. एरिया
- हरे-भरे वातावरण
- AC कमरा (VIP)

CALL: 9519313894,9415608783, 9415608710
आधुनिक समाचार पब्लिशिंग हाउस, यूपीएसआईडीसी, रेमण्ड रोड, औधोगिक थाने के पीछे भारत पेट्रोलियम के पहले, औधोगिक क्षेत्र, नैनी, प्रयागराज

20 क्रिकेट प्रतियोगिता के अंतिम दिन बी.पी. एड. एवं बी.एस.सी. (मैथ्स) के बीच फाईनल

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
लखनऊ। क्रिश्चयन कॉलेज लखनऊ में आयोजित त्रिदिवसीय टी-20 ा क्रिकेट प्रतियोगिता केअंतिम दिन बी.पी. एड. एवं बी.एस.सी. (मैथ्स) के बीच फाईनल मैच खेला एवं शिक्षक उपस्थित रहें। लखनऊ क्रिश्चयन कॉलेज लखनऊ में आयोजित त्रिदिवसीय टी-20 क्रिकेट प्रतियोगिता केअंतिम दिन बी.पी. एड. एवं बी.एस.सी. (मैथ्स) के बीच फाईनल मैच खेला गया। बी. उपस्थित रहें। लखनऊ क्रेश्चियन कॉलेज लखनऊ में आयोजित त्रिदिवसीय टी-20 क्रिकेट प्रतियोगिता केअंतिम दिन बी.पी. एड. एवं बी.एस.सी. (मैथ्स) के बीच फाईनल मैच खेला गया। बी.

गया। बी. पी. एड. के कप्तानह्रिषत ने टॉस जीतकर पहले बलेबाजी चूनी। निर्धारित 20 ओवर में बी.पी. एड, ने 204 रन बनाये,इसके उत्तर में बी.एस.सी, की टीम केवल 63 रन ही बना सकी और बी. पी. एड. से 141 रनों से हारगयी। फाइनल मैच के प्रारम्भ में महाविद्यालय के प्राचार्य, डॉ. नवीन एस. सिंह ने दोनों टीमों कापरिचय प्राप्त किया और खेलाड़ियों का खेल भावना बनाए रखने. के लिए प्रेरित किया। इस प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि डॉ. गोपाल कृष्ण एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. जे. के. सिंह नेइस मैच की मैन ऑफ द मैच रवीन्द्र सिंह तथा मैन ऑफ द सिरीज अभिषेक सिंह को ट्रॉफी प्रदानकी। विजयी टीम बी. पी.एड, को विजेता की ट्रॉफी महाविद्यालय के प्राचार्य द्वारा प्रदान की गयी। इसअवसर पर बड़ी संख्या महाविद्यालय के छात्र पी. एड. के कप्तानह्रिषत ने टॉस जीतकर पहले बलेबाजी चूनी। निर्धारित 20 ओवर में बी.पी. एड, ने 204 रन बनाये,इसके उत्तर में बी.एस.सी, की टीम केवल 63 रन ही बना सकी और बी. पी. एड. से 141 रनों से हारगयी। फाइनल मैच के प्रारम्भ में महाविद्यालय के प्राचार्य, डॉ. नवीन एस. सिंह ने दोनों टीमों कापरिचय प्राप्त किया और खेलाड़ियों का खेल भावना बनाए रखने. के लिए प्रेरित किया। इस प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि डॉ. गोपाल कृष्ण एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. जे. के. सिंह नेइस मैच की मैन ऑफ द मैच रवीन्द्र सिंह तथा मैन ऑफ द सिरीज अभिषेक सिंह को ट्रॉफी प्रदानकी। विजयी टीम बी. पी.एड, को विजेता की ट्रॉफी महाविद्यालय के प्राचार्य द्वारा प्रदान की गयी। इसअवसर पर बड़ी संख्या महाविद्यालय के छात्र एवं शिक्षक पी. एड. के कप्तानह्रिषत ने टॉस जीतकर पहले बलेबाजी चूनी। निर्धारित 20 ओवर में बी.पी. एड, ने 204 रन बनाये,इसके उत्तर में बी.एस.सी, की टीम केवल 63 रन ही बना सकी और बी. पी. एड. से 141 रनों से हारगयी। फाइनल मैच के प्रारम्भ में महाविद्यालय के प्राचार्य, डॉ. नवीन एस. सिंह ने दोनों टीमों कापरिचय प्राप्त किया और खेलाड़ियों का खेल भावना बनाए रखने. के लिए प्रेरित किया। इस प्रतियोगिता के मुख्य अतिथि डॉ. गोपाल कृष्ण एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. जे. के. सिंह नेइस मैच की मैन ऑफ द मैच रवीन्द्र सिंह तथा मैन ऑफ द सिरीज अभिषेक सिंह को ट्रॉफी प्रदानकी। विजयी टीम बी. पी.एड, को विजेता की ट्रॉफी महाविद्यालय के प्राचार्य द्वारा प्रदान की गयी। इसअवसर पर बड़ी संख्या महाविद्यालय के छात्र एवं शिक्षक उपस्थित रहें।

महाश्मशान मणिकर्णिका घाट पर धधकती चिताओं के बीच खेली भस्म की होली, भोले भक्तों में दिखा गजब का उत्साह

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
काशी । बाबा की नगरी काशी में रंगभरी एकादशी के बाद गुरुवार को महाश्मशान मणिकर्णिका घाट

पर मसाने की होली खेलने की परंपरा का हिस्सा बनने के लिए लोगों का उत्साह चरम पर रहा। महाश्मशान मणिकर्णिका घाट पर लाखों लोगों ने भस्म की होली खेली। इस दौरान लोगों में गजब का उत्साह देखने को मिला। चिता भस्म की होली पर बाबा के भक्त जमकर झूमे और मसान खेलें मसाने में होली दिगंबर.... के बोलों से गूंज उठा। भक्तों ने बाबा के संग जमकर मसान की होली खेली। इस दौरान हर हर महादेव के जयघोष लगे। साथ ही लोगों ने डमरू बजाकर होली का हुड़दंग दिया। भूतनाथ की मंगल-होरी, देखि सिहाएं बिरिज के गोरी, धन-धन नाथ अघोरी दिगंबर खेलैं मसाने में होरी। महाश्मशान में जहां राग और विराग एकाकार हुए। वहीं, ब्रज की होली के रंग भी बिखरे। भूत भावन महादेव जब होली खेलने निकले तो शिवगणों की भी होली हो ली। गुरुवार को मणिकर्णिका तीर्थ पर स्थित महाश्मशान अनोखी होली का साक्षी बना। मणिकर्णिका महाश्मशान पर एक तरफ धधकती चिताएं तो दूसरी तरफ अपने आराध्य संग होली खेलने को आतुर शिवगणों का उल्लास देखते ही बन रहा। महाश्मशान की होली में इस बार ब्रज के रंग भी घुल गए। चिता भस्म के साथ हवा में उड़ रहे गुलाल ने पूरे माहौल में राग, विराग, प्रेम और उल्लास के रंग घोल दिए। जलती चिताओं की परिक्रमा करने के बाद बाबा मसान नाथ का आशीर्वाद लेकर चिता भस्म की होली शुरू हुई तो बस सब शिव के रंग में रंगे नजर आने लगे। भोले भक्तों ने काशी में रंगभरी एकादशी के अगले दिन महाश्मशान मणिकर्णिका घाट पर मसाने की होली खेलने की परंपरा निभाई गई। मान्यता है कि चिता भस्म की होली बाबा मसान नाथ को प्रसन्न करने के साथ ही शुरू हो जाती है। मसान नाथ की पूजा के बाद दोपहर में रंगों के साथ चिता भस्म की होली मणिकर्णिका घाट पर शुरू हुई तो शिव की नगरी रंगों में डूब गई।

प्रेमी जोड़े ने ट्रेन के आगे कूदकर मौत को लगाया गले, परिवार में मचा कोहराम

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
वाराणसी । जिले में प्रेमी युगल ने ट्रेन के आगे कूदकर खुदकुशी कर ली। घटना को लेकर दोनों परिवारों में कोहराम मचा है। दोनों ने अचानक आत्मघाती कदम उठाया है। घटना की वजह अभी स्पष्ट नहीं हो सका है। उत्तर प्रदेश के वाराणसी जिले में हैरान करने वाली घटना हुई है। जिले के चौबेपुर क्षेत्र के कादीपुर रेलवे स्टेशन के पीछे परानापुर दलित बस्ती के एक प्रेमी युगल ने ट्रेन के आगे कूदकर जान दे दी। घटना को लेकर मौके पर हड़कंप मच गया। जानकारी के अनुसार,

परानापुर गांव के छट्ठू राम के पुत्र भोला (20) का गांव के ही मुन्ना राम की बेटी बरखा के साथ विगत दो वर्षों से प्रेम प्रपंच चल रहा था। इस मामले में कई बार थाने में पंचायत भी हो चुकी है। बुधवार/गुरुवार की रात एक बजे अचानक प्रेमी युगल ने कादीपुर रेलवे स्टेशन के पास गोरखपुर से वाराणसी जा रही चोरी चौरा एक्सप्रेस ट्रेन के सामने कूदकर जान दे दी। दोनों के पिता मजदूरी करते हैं। लड़की की शादी चौबेपुर के ही चुहरपुर गांव में तय हुई थी, लेकिन लेनदेन के चक्कर में रिश्ता टूट गया था। युवती बीए की छात्रा बताई जा रही है। वहीं युवक ने अभी इंटरमीडिएट की परीक्षा दी थी।

तहसील कोर्ट के सामने वादी ने खुद पर उड़ेला केरोसीन, निकाली माचिस, रोते हुए बताई ये सच्चाई

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
मऊ । संबंधित जमीन का दाखिल खारिज कराने के नाम पर गांव के प्रधान द्वारा 50 हजार रुपया की कि उस समय संबंधित जमीन का दाखिल खारिज कराने के नाम पर गांव के प्रधान द्वारा 50 हजार रुपया की मांग की गई। इतना ही

मांग की गई। इतना ही तहसीलदार पर आरोप लगाते हुए कहा कि उनके आदमियों ने 25 हजार रुपये की मांग दो माह पहले की। जब उसके द्वारा कोई राशि नहीं दी गई तो उसकी बैनामा के नामातंरण को खारिज कर दिया। मऊ जिले के घोसी तहसील में गुरुवार की दोपहर उस समय अफरा तफरी मच गया। जबकि एक वादकारी ने अचानक तहसीलदार कोर्ट के सामने अपने ऊपर आत्महत्या करने के लिए खुद पर मिट्टी का तेल उड़ेल दिया। आग लगाने के लिए जैसे ही माचिस जलाने की कोशिश तो कुछ लोगों ने उसे पकड़ लिया। वादकारी ने आग लगाने से पहले तहसीलदार के खिलाफ जमकर नारेबाजी करते हुए चिल्लाकर रुपया न मिलने पर उसके बैनामा को खारिज करने का आरोप लगाता रहा। वहीं, इस मामले की सूचना मिलने पर घोसी पुलिस वादकारी को हिरासत में लेकर घोसी कोतवाली पहुंची। जानकारी के अनुसार, घोसी तहसील क्षेत्र के मूंगमास निवासी श्रीकृष्ण गोड़ पुत्र प्रेमचंद्र ने बताया कि उसके द्वारा गांव में दो मंडा के करीब मई 2023 में एक जमीन का बैनामा कराया था। आरोप लगाया तहसीलदार पर आरोप लगाते हुए कहा कि उनके आदमियों ने 25 हजार रुपये की मांग दो माह पहले की। जब उसके द्वारा कोई राशि नहीं दी गई तो उसकी बैनामा के नामातंरण को खारिज कर दिया।आरोप लगाया कि इस बारे में उसके द्वारा सीएम पोर्टल से लेकर हर जगह पर शिकायत की गई लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। मजबूरन वह मिट्टी का तेल लेकर गुरुवार को घोसी तहसील में पहुंचा। जहां उसने तहसीलदार कोर्ट के सामने आत्महत्या करने की नीयत से मिट्टी का तेल अपने उड़ेल दिया। लेकिन वह खुद को जला पाता इससे पहले मौजूद लोगों ने उसे पकड़ लिया। तहसीलदार कोर्ट के सामने अचानक इस घटना से पूरे तहसील में हड़कंप की स्थिति बन गई। सूचना मिलने पर पहुंची घोसी पुलिस ने श्रीकृष्ण गोड़ को हिरासत में ले लिया। घोसी कोतवाली इस बारे में जांच में जुटी है। वहीं, इस मामले में घोसी तहसीलदार धर्मेंद्र कुमार पांडेय का कहना है कि बैनामा लिया गया है। उसमें कई खातेदार हैं, इसके द्वारा चौहदी दिखाया गया है, जो नियम विरुद्ध होने पर इसे खारिज कर दिया गया है।

लाठी-डंडे व रॉड से पीटकर दिनदहाड़े शख्स की हत्या, घर के इकलौते पुरुष की मौत से छीन गया परिवार का सहारा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
आजमगढ़। जिले में गुरुवार की सुबह एक शख्स की लाठी-डंडे व रॉड से हमला कर हमलावरों ने मौत के घाट उतार दिया। शोर सुनकर आसपास के लोग जब पहुंचे तो हमलावर वहां से फरार हो गए। घटना के बाद परिवार के साथ ही पूरे गांव में हड़कंप मच गया। आजमगढ़ शहर कोतवाली के बाग लखराव गांव के पूर्व प्रधान पुत्र की गुरुवार को लाठी-डंडे व रॉड से प्रहार कर हत्या कर दी गई। घटना की जानकारी होते ही शहर कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और शव को पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। घटना से परिजनों में कोहराम मच गया है। पुलिस हत्या के कारणों का पता लगाने व अन्य जांच की कवायद में जुटी हुई है। बाग लखराव गांव के पूर्व प्रधान स्व. विजय चंद्र के 40 वर्षीय पुत्र पंकज कुमार पर गुरुवार की सुबह 11 बजे घर से 800 मीटर की दूरी पर स्थित जंगबहादुर के घर के पास लाठी-डंडे व रॉड से हमला कर दिया गया। जानकारी होने पर ग्रामीण मौके पर जुटे तो हमलावर मौके से भाग गए। आनन-फानन पुलिस को सूचना देने के साथ ही घायल पंकज को लोग इलाज के लिए जिला अस्पताल ले गए। जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना पहुंचते ही परिजनों में कोहराम मच गया। परिजनों के अनुसार पंकज को जंगबहादुर के परिवार के लोगों ने फोन कर बुलाया था। इसके बाद ही उन पर हमला किया गया। मृतक एलआईसी एजेंट था। मृतक मां-बाप का इकलौता पुत्र था और उसकी पांच पुत्रियां हैं। मृतक के पिता की पहले ही मौत हो चुकी है। पंकज की मौत के बाद परिवार में कोई पुरुष सदस्य नहीं बचा है। घटना से गांव में हड़कंप मच गया है। पुलिस मौके पर पहुंच कर जांच पड़ताल की कवायद में जुटी रही। वहीं मृतक के परिवार में चीख- पुकार मची है।

मासूम संग छेड़खानी के आरोप में पुलिस थाने लेकर आई, देर रात तबीयत खराब- जानिए क्या हुआ

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
आजमगढ़। युवक की मौत के बाद नाराज परिजनों ने हंगामा शुरू कर दिया। पुलिस की गाड़ी को रोक दिया। सूचना पाकर प्रभारी एसएसपी कृष्ण कुमार बिश्नोई मौके पर पहुंचे और मामले को शांत कराने की कोशिश की, लेकिन गुस्साए लोगों ने चंद चौराहे पर जाम लगा दिया। गोला इलाके के राजीव गांधी इंटर कॉलेज के प्रबंधक के शिक्षक भाई पर सात साल की बच्ची से छेड़खानी का आरोप था। शिकायत के आधार पर बुधवार को पुलिस आरोपी विनय कुमार पांडेय उर्फ दीपक (42) को लेकर थाने आई। देर रात उसकी तबीयत खराब हो गई। आनन-फानन पुलिस लेकर अस्पताल गई, जहां उसकी मौत हो गई। परिजनों ने पुलिसवालों पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए उनके खिलाफ थाने में तहरीर दी है।युवक की मौत के बाद नाराज परिजनों ने हंगामा शुरू कर दिया। पुलिस की गाड़ी को रोक दिया। सूचना पाकर प्रभारी एसएसपी कृष्ण कुमार बिश्नोई मौके पर पहुंचे और मामले को शांत कराने की कोशिश की, लेकिन गुस्साए लोगों ने चंद चौराहे पर जाम लगा दिया। देर रात तक पुलिस मौके पर जाम खत्म कराने के प्रयास में जुटी थी। आरोपों की जांच सीओ गोला को सौंप दी गई है। जानकारी के मुताबिक, गोला के बाढ़ा बुजुर्ग निवासी चंद्रप्रकाश पांडेय और कृष्ण कुमार पांडेय राजीव गांधी इंटर कॉलेज के प्रबंधक हैं। गांव के परिवार से इनका विवाद चलता है।

डाला पुलिस ने दो वारंटी को किया गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
डाला सोनभद्र। स्थानीय डाला पुलिस चौकी क्षेत्र से न्यायालय के आदेश पर दो अलग-अलग मुकदमा माननीय न्यायालय के आदेश के क्रम में डाला पुलिस चौकी क्षेत्र से दो अलग-अलग मुकदमा में दो वांछित वारंटी अभियुक्तों में मनोज उम्र

में वांछित वारंटी दो अभियुक्तों को पुलिस ने गिरफ्तार कर के भेज दिया इस संबंध में डाला चौकी इंचार्ज राजेश कुमार सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि पुलिस अधीक्षक सोनभद्र के निर्देशन में जिले में अपराध व अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान तहत लगभग 48 वर्ष पुत्र रमाशंकर निवासी सेक्टर बी चौराहा को मु.न 824/12 147 323, 504, 506 धारा में एव मोनू कुमार पुत्र भग्गु निवासी डाला चढ़ाई को 8/21 एनडीपीएस एक्ट में दोनो वारंटियों को आज बृहस्पतिवार को गिरफ्तार कर मां. न्यायालय भेजा जा रहा है।

नवरात्र मेला के दृष्टिगत जिलाधिकारी ने प्रशासनिक भवन में अधिकारियों के साथ बैठक कर तैयारियों

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
मीरजापुर। बिजली, पेयजल, बैरीकेटिंग, अस्थायी शौचालय सहित तीनो मन्दिरो के क्षेत्रो में साफ सफाई व्यवस्था के साथ रेलवे स्टेशन पर भी कराये जाए यात्रियों के लिये समुचित व्यवस्था वाहन स्टैण्डो व प्रसाद दुकानों पर बड़े अक्षरो में लगाया जाय रेट लिस्ट कालीखोह, अष्टभुजा व विन्ध्याचल क्षेत्र का भ्रमण कर किये जा रहे तैयारियों का किया निरीक्षण मीरजापुर 20 मार्च 2024- आगामी चैत्र नवरात्र मेला विन्ध्याचल की तैयारियों के दृष्टिगत जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन ने विन्ध्याचल के प्रशासनिक भवन में अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक कर अब तक की तैयारियों की समीक्षा की। जिलाधिकारी ने कहा कि मां विन्ध्यवासिनी देवी के दरबार में आने वाले श्रद्धालुओं के सुगमतापूर्वक दर्शन पूजन, बिजली पानी सड़क शौचालय रैन बसेरा खोया पाया केंद्र दवा एवं तीनों मंदिरों की भव्य सजावट तैयारी पर चर्चा की गयी। इस दौरान जिलाधिकारी ने कहा कि मेले से संबंधित विभागीय अधिकारी विंध्याचल धाम मेला क्षेत्र में आने वाले में समस्त विद्युत पोलो को प्लास्टिक के पन्नी से ढका जाय ताकि कि करंट उतरने की संभावना न बन सके, विंध्य विधा पीठ इन्टर कालेज के प्रांगण में रैन बसेरा के साथ पर्याप्त मात्रा में बिजली पानी शौचालय बेहतर साफ सफाई एवं खाद्य विभाग की ओर से पूड़ी सब्जी का स्टाल लगाया जाए, अमरावती चैराहे के आस पास किसी प्राइवेट जमीन को चिहिन्त कर रैन बसेरा बनाये जिसमें सभी सुविधाएं उपलब्ध करायी जाए। प्रमुख गेटों पर यात्रियों के लिए जूता चप्पल जमा करने के लिए भी निर्धारित स्थान बनाया जाए, पुरानी वी0आई0पी0 मार्ग पर बैरिकेडिंग कर वाहन रोके जाए, उन्होने खाद्य विभाग अधिकारियों को निर्देशित किया कि मेला क्षेत्र में सभी होटलो दुकानों पर खाने-पीने की सामग्री

की जांच हेतु मीरजापुर शहर एवं विंध्याचल धाम में अभियान चलाकर सैंपल लिए जाएं, नगर पालिका प्रशासन को निदेशित किया गया कि विंध्याचल धाम एवं गंगा घाटों पर बेहतर साफ सफाई का प्रबंध कराये। स्वास्थ्य विभाग को निर्देशित किया गया कि चिहिन्त 13 स्थानों पर स्वास्थ्य कैंप लगाया जाए एवं पर्याप्त मात्रा में दवा की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए, स्वास्थ्य कैम्पो पर बच्चों के लिए भी दवा उपलब्ध रहे पूरे मेला क्षेत्र में जगह-जगह वाहन स्टैंड बनाए जाएंगे नगर पालिका प्रशासन की ओर से रेट सूची लगाया जाए निर्धारित शुल्क से अधिक वसूल करने वाले स्टैंड के खिलाफ कार्रवाई करें। मां विंध्यवासिनी मंदिर, महाकाली मंदिर एवं अष्टभुजा मंदिर तीनों मंदिरों की भव्य सजावट किए जाएंगे नगर पालिका प्रशासन की ओर से विंध्याचल धाम क्षेत्र में 300 अस्थाई शौचालय बनाने के लिए जिलाधिकारी ने निर्देशित किया। नवरात्र मेले के दौरान गर्मी के मौसम चल रहे हैं समाजसेवी संस्थाओं से अपील किया कि की जगह-जगह बिस्किट पानी उपलब्ध कराया जाए। बैठक के दौरान पुलिस अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं को दर्शन पूजन के लिए समुचित व्यवस्थाएं किया जाए किसी भी प्रकार से उनके साथ दुकानदारों एवं अन्य लोगों द्वारा दुर्व्यवहार न किया जाए ऐसा करने वाले व्यक्तियों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्यवाही की जायेगी। तत्पश्चात जिलाधिकारी ने विन्ध्य कारीडोर का भ्रमण कर स्थलीय निरीक्षण किया। जिलाधिकारी ने बरतर तिराहा से होते हुए सदर बाजार कोतवाली मार्ग एवं परिक्रमा पथ पक्का घाट मार्ग का निरीक्षण किया, निरीक्षण के दौरान चैड़ीकरण किए गए मार्गो पर दुकानदारों द्वारा नाली पर बढ़कर दुकान लगाए हुए थे एवं दुकान के आगे लगायी प्लास्टिक की पन्नी को जिलाधिकारी ने उतरवाते हुये निर्देशित किया कि कोई भी दुकानदार नाली के बाहर दुकान न लगाये अन्यथा कड़ी कार्यवाही की जायेगी। उन्होने कार्य दाई संस्था को चैड़ीकरण किए गए मार्गो की नाली जगह-जगह टूटे हुए पत्थर को देखकर कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुये कहा कि समय रहते हुए सभी कार्य पूर्ण कर लिया जाए। परिक्रमा पथ में जगह-जगह पान के पीक देख कर थानाध्यक्ष को निर्देशित किया कि की पकड़े जाने पर कोई भी हो कार्रवाई करें पक्का घाट पर पहुंची गंगा घाटों पर होने वाले कार्यों को भी उन्होंने देखा संबंधित विभागों को निर्देशित किए गए की नवरात्र में बड़ी संख्या में श्रद्धालु आएंगे उनके लिए अच्छी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की करायें। जिलाधिकारी ने विंध्याचल रेलवे स्टेशन का निरीक्षण किया निरीक्षण के दौरान स्टेशन अधीक्षक को निर्देश दिए गए कि पर्याप्त मात्रा में साफ सफाई व्यवस्था, बिजली पानी एवं आने वाले श्रद्धालुओं के लिए एलाउंसमेंट की व्यवस्था पर्याप्त मात्रा में शौचालय बनाया जाए आने वाले श्रद्धालुओं के लिए सुनिश्चित किया जाए। तत्पश्चात जिलाधिकारी ने अधिकारियों के संग अष्टभुजा, कालीखोह मन्दिर व उसके आस पास वाहन स्टैण्ड व रैन बसेरा का निरीक्षण कर समुचित व्यवस्था समय रहते कराने का निर्देश दिया। इस इस दौरान अपर जिलाधिकारी वि0/रा0 शिव प्रताप शुक्ल, नगर मजिस्ट्रेट लाल बहादुर सिंह, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ सी0एल0 वर्मा, अधिशासी अभियन्ता विद्युत, अधिशासी अधिकारी नगर पालिका परिषद मीरजापुर गोवा लाल सहित अन्य सभी सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहें।

विजयगढ़ दुर्गा किला पर आदिवासी महासम्मेलन व सामूहिक शादी सम्पन्न

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
रामगढ़। नगवां ब्लाक स्थित बिजयगढ दुर्ग किला पर गोंडवाना सामोहिक शादी रहा जहां पर रात्रि में व सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया गया वही गरीब 9 जोडी शादी

गणतंत्र पार्टी के तत्वावधान में तीन दिवसीय मेला का आयोजन किया गया जिसमें आदिवासी महासम्मेलन व सामोहिक शादी कि गयी। वही कार्यक्रम कि अध्यक्षता कर रहे जिलाध्यक्ष रामनरेश पोया ने बताया कि बीते 18 से 20 तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किया गया जिनमे प्रमुख आदिवासी महासम्मेलन व निर्धन कन्याओं का शुबह7बजे समापन किया गया। इस दौरान उपस्थित रहे रमाशंकर सिंह पोया प्रदेश उपाध्यक्ष, श्याम बिहारी मरकाम युवा मोर्चा व गणमान्य नागरिक उपस्थित थे संचालन रामचंद्र टेकाम, जिला महासचिव सचिव साथ में बरकोनिय थाने का पुलिस प्रशासन भी रात भर रहे ।

मिर्जापुर ७९ लोकसभा क्षेत्र के उम्मीदवार राजेंद्र एस बिन्द घोषित किए गए

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
मीरजापुर। मीरजापुर 79 लोकसभा क्षेत्र से राजेंद्र एस बिन्द को पीडीए ने अपना उम्मीदवार घोषित किया। राजेंद्र एस बिन्द मूल रूप से जगतपुर बसवापुर भदोही के निवासी बताए जा रहे हैं। इनका मुख्य व्यवसाय मुंबई में स्टील का बताया जा रहा है। इनको स्टील उद्योगपति के रूप में ख्याति भी प्राप्त है। इन्होंने पॉलिटेक्निक के साथ-साथ हंडिया से फीडर में इंजीनियरिंग भी की है।

विश्व गौरैया दिवस पर गौरैया संरक्षण का लिया गया संकल्प-सौरभ कान्त

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। युवा भारत ट्रस्ट द्वारा सदर ब्लॉक के देवरी खुर्द गांव में विश्व गौरैया दिवस के अवसर पर गौरैया के लिए दाने व पानी के इंतजाम कर गौरैया संरक्षण का संकल्प लिया गया। प्रदेश सरकार के यूथ आइकॉन सौरभ कान्त पति तिवारी एंव शिवशंकर तिवारी ने कसोरे में पानी भर कर कार्यक्रम की सुरुआत की। सौरभ ने बताया कि उनके टीम के द्वारा लगभग एक दशक से यह अभियान चलाया जा रहा है जिसकी सुरुआत आज के ही दिन विश्व गौरैया दिवस पर हर वर्ष की जाती है जो पूरे गर्मी भर चलती है।उन्होंने कहा कि पक्षी बेजुबान होते है और अपनी भावना किसी से व्यक्त नही कर सकते इसलिए मानव होने के नाते यह हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम आगे आये और इन बेजुबानों की मदद करें।राजकुमार,रमेश यादव एंव नितेश तिवारी ने कहा कि गौरैया घर-आंगन की रौनक है जिससे घर चहकता रहता है। और पर्यावरण संरक्षण की दृष्टिकोण से भी गौरैया बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए हम सभी को मिलकर थोड़ा समय गौरैया के लिए जरूर निकलना चाहिए। दीपक,राहुल यादव एंव बिट्टू तिवारी ने कहा कि संगठन के द्वारा जनपद के सभी ग्राम पंचायतों में गौरैया संरक्षण अभियान चलाया जाएगा जिसके अंतर्गत उनके लिए जगह-जगह दाने,पानी और आश्रय स्थल की व्यवस्था की जायेगी। उक्त अवसर पर सक्षम त्रिपाठी,शिवांश,सार्थक आदि लोग उपस्थित थे।

प्रथम वर्ष के छात्र-छात्राओं को कैंडील जलाकर लैंप एवं की ली शपथ ग्रहण

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। साईं हॉस्पिटल एंड कॉलेज ऑफ़ नर्सिंग, सजौर, रॉबर्ट्सगंज,सोनभद्र में लैंप लाइटिंग सेरिमनी कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में प्रबंधक डॉक्टर अनुपमा सिंह, डॉ एस के सिंह के द्वारा सरस्वती वंदन तथा दीप प्रज्जवलित करके लैंप लाइटिंग कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया, कोर्स ए0एन0एम 12प् बैच , जी0एन0एम 14प् बैच, बी0एस0सी नर्सिंग 5प् बैच प्रथम वर्ष के छात्र-छात्राओं को कैंडील जलाकर लैंप एवं शपथ ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन बड़े ही धूमधाम से कराया गया, जिसमें कॉलेज की प्रबंधक डॉ अनुपमा सिंह ने स्पीच के माध्यम से सभी छात्र-छात्राओं को नर्सिंग क्षेत्र की महत्वता को बताते हुए एक नर्स की भूमिका

को जीवन की बहुत बड़ी भूमिका बताई उन्होंने यह भी बताया कि हम लोग बहुत ही भाग्यशाली हैं जो इस भूमिका को निभाने का भगवान ने हम सबको अवसर दिया। मुख्य अतिथि डॉक्टर एस के सिंह के द्वारा सभी छात्र-छात्राओं को कैंडल जलाकर प्रज्वलित करके शपथ ग्रहण कराया गया। कार्यक्रम में उपस्थित कॉलेज के शिक्षक एंजलिन बिट्टी , शिवाकांत शर्मा, दिव्यांशी बोस, रागिनी श्रीवास्तव, नरेंद्र सिंह राणा , सनी प्रसाद, स्टॉफ राजन सोनी, आशुतोष मिश्रा, अहमद रजा, गजेंद्र सिंह, उपस्थित रहे ।

आकाशी बिजली की चपेट में आने से अधेड़ महिला की मौत

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
रामगढ़। पन्नूगंज थाना क्षेत्र के

चपईल गांव में आकाशी बिजली की चपेट में आने से मंगलवार की देर शाम 64 वर्षिय महिला की हुई मौत।जानकारी के अनुसार पन्नूगंज थाना क्षेत्र के चप?ईल गांव निवासी अमरावती पत्नी महेश सिंह उम्र 64 वर्ष जो बीती रात शाम 8:00 बजे का अपने खेत के तरफ से घर वापस आ रही थी रास्ते में आकाशी बिजली की चपेट आने से अचेत होकर गिर पड़ी परिजनों द्वारा अस्पताल ले जाया गया जहां प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सको ने उन्हें मृतु घोषित कर दिया ।मौके पर पहुंची पन्नूगंज पुलिस पंचनामा कर पीएम के लिए जिला अस्पताल भेजा गया।

भारतीय स्टेट बैंक रॉबर्ट्सगंज शाखा 31 तारीख को खुला रहेगा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। जिलाधिकारी चंद्र विजय सिंह ने अवगत कराया है कि अपर मुख्य सचिव वित्त (लेखा) अनुभाग-1 लखनऊ, उ0 प्र0 शासन के निर्देशानुसार वित्तीय वर्ष के अन्तिम कार्यदिवस 31 मार्च 2024 को रविवार होने के कारण साप्ताहिक अवकाश है। 31 मार्च 2024 को शासकीय लेन-देन को दृष्टिगत रखते हुए शासकीय कार्य प्रभावित न हो, वित्तीय नियम संग्रह खण्ड-5 भाग-2 के प्रस्तर-503 में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए मैं चन्द्र विजय सिंह, कलेक्टर एवं जिलाधिकारी सोनभद्र यह आदेश देता हूँ कि भारतीय स्टेट बैंक रावर्टसगंज की शाखा दिनांक 31मार्च 2024 को पूरे दिन खुले रहेंगे। उक्त शाखा जिलाधिकारी / वरिष्ठ कोषाधिकारी सोनभद्र के निर्देश पर ट्रान्जेक्सन समाप्त होने पर उपरोक्तानुसार बन्द की जायेगी।

एक अभियुक्त कि हुई गिरफ्तारी बीना परमीट के गिट्टी लदी गाडी लेकर जारहा था

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। थाना रॉबर्ट्सगंज पुलिस द्वारा बिना परमिट के जा रहे ट्रक बरामद कर मुकदमा पंजीकृत कर 01 अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया । पुलिस अधीक्षक महोदय के निर्देशन मे अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) तथा क्षेत्राधिकारी नगर महोदय के आदेश के क्रम में उपखनिज चोरी व पासरो के विरुद्ध प्रचलित अभियोन के क्रम में श्री मनोज कुमार खान निरीक्षक सोनभद्र मो0नं0 9140273812 मय हमराह उ0नि0 विनोद कुमार यादव व हे0का0 अशोक कुमार चौधरी थाना जुगैल के द्वारा खनन बैरियर लोढी पर चेकिंग के दौरान मुखबीरी सूचना पर कि एक ट्रक वाहन सं0 यू0पी0 63 एटी 0154 बिना परमिट के अबैध गिट्टी लोड कर चोपन की तरफ से आ रहा है, सूचना पर बिश्वास कर ट्रक रोकने का प्रयास किया गया लेकिन वाहन चालक द्वारा बैरीकेटिंग में टक्कर मारते हुए खतरनाक तरीके से वाहन को भगाने लगा जिससे बैरिकेटिंग क्षतिग्रस्त हो गया । खनन विभाग में लगी सरकारी वाहन से उक्त ट्रक को पीछा किया गया तथा ट्रक के भागने की सूचना थाना रा0गंज को भी दिया गया । वाहन चालक के द्वारा कट मारते हुए खतरनाक तरीके से से चलाते हुए भगाने लगा । वाहन का पीछा किया गया कई बार वाहन चालक ने कट मारते हुए साइड (पास) नही दे रहा था । किसी प्रकार बहुत प्रयास करने पर उक्त वाहन को रावर्टसगंज पुलिस बल के मदद से चण्डी तिराहा के

पास अन्य ट्रकों को रोककर वाहन को रोका गया । वाहन चालक वाहन को छोड़कर भागने का प्रयास किया लेकिन मौके पर उपस्थित पुलिस बल के द्वारा चालक को पकड़ लिया गया । तत्पश्चात वाहन ट्रक उपरोक्त कि चेकिंग कि गयी तो वाहन ट्रक उपरोक्त पर रजिस्ट्रेशन नं0 ळइ63ंऊ 0154 अंकित था जिसपर तिरपाल से ढ़ककर गिट्टी लदी थी । वाहन चालक से वाहन में लदी गिट्टी के सम्बन्ध प्रपत्र माँगा गया तो चालक द्वारा कोई भी प्रपत्र नहीं दिखाया । वाहन चालक से उसका नाम पूछा गया तो वाहन चालक ने अपना नाम रामा यादव पुत्र इन्द्रदेव यादव नि0 निहालपुर थाना केराकत जनपद जौनपुर मो0नं0 8115787717 बताया । वाहन चालक से पूछने पर बताया कि साहब मेरे मालिक के कहने पर मैने बिना परमिट के गिट्टी लोड किया हूँ । उपर्युक्त के सम्बन्ध में खान निरीक्षक श्री मनोज कुमार द्वारा थाना स्थानीय पर दिये गये प्रार्थना पत्र के आधार पर मु0अ0सं0 205/24 धारा 186,279,379,411,427 भादवि व 3/58/72 उ0प्र0 उपखनिज परिहार नियमावली , 4/21 खान व खनिज अधि0 व 3 सार्वजनिक सम्पति नुकसान निवारण अधि0 बनाम 1. यूपी 63 एटी 0154 का चालक . रामा यादव पुत्र इन्द्रदेव यादव नि0 निहालपुर थाना केराकत जनपद जौनपुर उम्र करीब 48 वर्ष 2. वाहन ट्रक संख्या यूपी 63 एटी 0154 का स्वामी नाम पता अज्ञात 3. क्रसर प्लान्ट डायमण्ड स्टोन क्रसर बारी डाला का स्वामी नाम पता अज्ञात के पंजीकृत किया गया तथा पकडे गये वाहन चालक रामा यादव पुत्र इन्द्रदेव यादव नि0 निहालपुर थाना केराकत जनपद जौनपुर को कारण गिरफ्तारी बताते हुए समय करीब 23.55 बजे बजाफ्ता बकायदा नियमानुसार हिरासत पुलिस में लिया गया । गिरफ्तारी के समय मानवाधिकार आयोग व उच्चतम न्यायालय के आदेशों निर्देशों का अक्षरशः पालन किया। अभियुक्त को गिरफ्तार कर अग्रिम विधिक कार्यवाही हेतु मा0 न्यायालय रवाना किया जा रहा है। **गिरफ्तारी/बरामदगी का दिनांक व स्थान-** दिनांक 19.03.2024 समय 23.55 बजे घटनास्थल मण्डी परीसर थाना रा0गंज सोनभद्र व बरामद एक अदद ट्रक सं0 यू0पी0 63 एटी 0154 पर अबैध/बिना परमिट के 28 घन मीटर गिट्टी लदी हुई । **गिरफ्तार अभियुक्त का विवरण-** 1-रामा यादव पुत्र इन्द्रदेव यादव नि0 निहालपुर थाना केराकत जनपद जौनपुर। गिरफ्तारी/बरामदगी करने वाली टीम का विवरण-1- उ0नि0 विनोद कुमार यादव थाना रा0गंज सोनभद्र। 2- हे0का0 अशोक कुमार चौधरी थाना जुगैल सोनभद्र।

हमारे जीवन में हवन, यज्ञ, पूजन, रंग का विशेष महत्व है

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। गायत्री परिजन एक दूसरे से गले मिलकर,अबीर लगाकर दी रंगभरी एकादशी की बधाई ढोलक की थाप पर फागुनी गीतों की बही बयार अखिल भारतीय गायत्री परिवार सोनभद्र द्वारा पूज्य गायत्री माता, गुरुदेव- गुरुमाता के सूक्ष्म संरक्षण में जनपद मुख्यालय सोनभद्र नगर के गायत्री माता मंदिर परिसर में रंग भरी एकादशी के अवसर पर आचार्य अरुण शास्त्री के आचार्यत्व में मुख्य यजमान वरिष्ठ साहित्यकार,दीपक कुमार केसरवानी, प्रतिभा देवी नेतृत्व,आओ गढे संस्कारवान पीढ़ी की जिला अध्यक्ष सरिता जायसवाल के संचालन में श्री गायत्री महायज्ञ, हवन, पूजन, आरती प्रसाद वितरण एवं रंग- गुलाल से होली खेलने का कार्यक्रम आयोजित हुआ। इस अवसर पर उपस्थित गायत्री परिजनों को संबोधित करते हुए मुख्य यजमान दीपक कुमार केसरवानी ने कहां कि-ठहमारे जीवन में हवन, यज्ञ, पूजन, रंग का विशेष महत्व है, भारतीय संस्कृतिक परंपरा में मनाया जाने वाले प्रत्येक पर्व, त्यौहार, व्रत, उपवास का वैज्ञानिक महत्व है। रंगों का त्योहार होली के पूर्व रंगभरी एकादशी से ही होली प्रारंभ हो जाता है,इस दिन सभी देवालयों, शिवालयों में भक्तजन अपने ईष्ट देवी- देवताओं को रंग- गुलाल, अबीर चढ़ाकर, ढोलक की थाप फागुनी लोकगीत का गायन कर प्रसन्न करते हैं। इसी परंपरा के निर्वहन के लिए आज हम सभी गायत्री परिजन यहां उपस्थित हुए हैं। रंगों का भारतीय शास्त्रों में वैज्ञानिक, चिकित्सीय महत्व है, आयुर्वेदिक परंपराओं के अनुसार मनुष्य को स्वस्थ रखने के दृष्टि से रंगों का त्योहार होली मनाए जाने परंपरा की शुरुआत हुई। होली के दिन एक दूसरे पर प्राकृतिक रंगों की वर्षा कर एक दूसरे की स्वस्थ होने की मंगल कामना करते हैं।आज भी हमारे आदिवासीजन प्राकृतिक रंग फूलों, पेड़ों के पत्तों, हल्दी आदि आयुर्वेदिक जड़ी- बूटियो से तैयार कर एक दूसरे पर प्राकृतिक रंग बरसाकर आज के आधुनिक समय में भी प्रकृति से जुड़े रहने का संदेश देते हैं।आज भी इस परंपरा का पालन हम लोगों द्वारा किया जा रहा है।कार्यक्रम में गायत्री मंत्र, एकादशी कथा के पश्चात महिलाओं ने आदि देवता भगवान शंकर- भगवती पार्वती, युग पुरुष भगवान श्री राम-सीता, श्री कृष्ण-राधा आदि देवी-देवताओं पर आधारित फागुनी गीत गाकर उपस्थित जनों को आध्यात्मिक, सांसारिक आनंद से सरोबार कर दिया। आनंदित महिलाओं- पुरुषों एवं बच्चों ने एक दूसरे को अबीर- गुलाल लगाकर

रंगभरी एकादशी बधाई देते हुए विश्व की समस्त मानव जाति के स्वस्थ्य, सुखी, दीर्घायु होने की मंगल कामना किया।इस अवसर पर मिथलेश देवी, उषा, सुमन, शोभा, आशा, उर्मिला, शशि, सावित्री, सरिता, रामा, पुष्पा, लीलावती, गीता, श्यामा योगेश्वरी देवी,हर्षवर्धन,रामदेव, जयराम सोनी, आनंद शंकर गुप्त, आदि गायत्री परिजन उपस्थित रहे।

मुंबई इंडियंस का माहौल खराब रोहित शर्मा ने नहीं खेला अभ्यास मैच

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। मुंबई इंडियंस के शिविर में कुछ सही नहीं चल रहा है। बुधवार को अभ्यास सत्र के दौरान करने के प्रशन पर कप्तान हार्दिक और कोच बाउचर चुप्पी साध गए थे। मैच से पूर्व टीम को मुख्य कोच मार्क बाउचर ने संबोधित किया, सकता है कि मुंबई इंडियंस के शिविर में कुछ ठीक नहीं है। मुंबई इंडियंस की ओर से एक्स पर साझा किए गए वीडियो में दिखा कि रोहित विराट कोहली सहित कुछ शीर्ष खिलाड़?यों की अनुपस्थिति में पांच युवा खिलाड़?यों रजत पाटीदार, ध्रुव जुरैल, सरफराज खान,

टीम ने बिना मीडिया और दर्शकों के ही अभ्यास किया। मुंबई इंडियंस को 24 मार्च को अहमदाबाद में गुजरात टाइटंस में भिड़ना है। अहमदाबाद जाने से पूर्व मुंबई में बुधवार को टीम ने अभ्यास मैच खेला। मुंबई इंडियंस के खिलाड़?यों ने बुधवार को मीडिया और दर्शकों की गैरमौजूदगी में अभ?यास किया। रोहित शर्मा ने अभ?यास मैच में हिस?सा नहीं लिया। हार्दिक पांड्या को रोहित शर्मा की जगह कप्?तान बनाए जाने के बाद से फ्रेंचाइजी के माहौल में तनातनी बनी हुई है। रोहित शर्मा को हटाकर हार्दिक पांड्या को कप्तान नियुक्त जहां उन्होंने अभ्यास मैच के उद्देश्य और सत्र के लक्ष्य पर चर्चा की। हालांकि, सोमवार को टीम के शिविर में जुड़े पूर्व कप्तान रोहित शर्मा ने अभ्यास मैच में भाग नहीं लिया। रोहित शर्मा विगत तीन दिनों से नेट अभ्यास, स्ट्रेंथ ट्रेनिंग और अपनी चहलकदमी पर काम कर रहे हैं, इसलिए सत्र के शुरू होने से पूर्व अभ्यास के लिए वह मुंबई में ही रहेंगे। इससे पहले बुधवार को अभ्यास सत्र के दौरान रोहित शर्मा टीम के नए कप्तान हार्दिक पांड्या से गले मिले, लेकिन दोनों के बीच गर्मजोशी देखने को नहीं मिली। इससे साफ तौर पर समझा जा को देखकर हार्दिक उनके पास जाते हैं। रोहित उनसे हाथ मिलाना चाहते हैं, लेकिन हार्दिक उन्हें गले लगा लेते हैं। सोमवार को हुई प्रेस कान्फ्रेंस में भी टीम को पांच बार चैंपियन बनाने वाले रोहित शर्मा को हटाकर हार्दिक पांड्या को कप्तान नियुक्त करने के प्रशन पर कप्तान हार्दिक और कोच बाउचर चुप्पी साध गए थे। भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने इंग्लैंड के विरुद्ध हाल में समाप्त हुई टेस्ट सीरीज के दौरान पदार्पण करने वाले खिलाड़ियों की प्रशंसा करते हुए बुधवार को कहा कि उन्होंने इन युवा क्रिकेटरों के साथ खेलने का भरपूर आनंद लिया। आकाश दीप और देवदत्त पडिक्कल ने टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण किया। रोहित ने अपने इंस्टाग्राम हैंडल पर कहा, 'व्यक्तिगत रूप से मुझे इनके साथ काम करके बहुत मजा आया। जितने भी युवा लड़के थे, सब काफी चुलबुले थे।' उन्होंने कहा, 'इनमें से अधिकतर को मैं अच्छी तरह से जानता था तथा मुझे उनके मजबूत पक्षों के बारे में पता था। मैं जानता था कि वह किस तरह से खेलना चाहते हैं। मेरा काम केवल उन्हें सहज बनाए रखना था। जिस तरह से उन्होंने मेरी और राहुल भाई (मुख्य कोच राहुल द्रविड़) की उम्मीदों को पूरा किया, वह शानदार था।

आईपीएल 2024 में बॉलर्स के लिए काल बनेगा केकेआर का नया बैटर, प्रैक्टिस सेशन में की चौके-छक्कों की बरसात

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। आईपीएल 2024 (घ्झ्थ् 2024) के आगाज से ठीक पहले कोलकाता नाइट राइडर्स को एक बड़ा झटका लगा था। टीम के स्टार ओपनर जेसन रॉय ने निजी कारणों के चलते इस सीजन नहीं खेलने का फैसला लिया था। इस खबर से केकेआर के फैन्स सनन रह गए थे। हालांकि, रॉय की जगह पर टीम में शामिल किए गए धाकड़ बल्लेबाज फिल सॉल्ट (झ्प्त् ऐंटू) ने प्रैक्टिस सेशन में ही अपनी विस्फोटक बल्लेबाजी का नमूना पेश कर दिया है कोलकाता नाइट राइडर्स के लिए आईपीएल 2024 में फिल सॉल्ट ट्रंप कार्ड साबित हो सकते हैं। प्रैक्टिस सेशन में सॉल्ट ने अपनी तूफानी बल्लेबाजी से जमकर धमाल मचाया। सॉल्ट ने महज 41 गेंदों का सामना करते हुए 78 रन की नाबाद पारी खेली। सॉल्ट को केकेआर ने जेसन रॉय के रिप्लेसमेंट के तौर पर टीम में शामिल किया है। रॉय ने निजी कारणों के चलते अपना नाम वापस लिया था दरअसल, इंडियन प्रीमियर लीग के 17वें सीजन के आगाज से पहले केकेआर टीम प्रैक्टिस मैच खेल रही हैं। इंट्रा-स्क्वॉड मैच में फिल सॉल्ट ने बल्ले से जमकर तबाही मचाई। सॉल्ट की विस्फोटक बल्लेबाजी का वीडियो केकेआर ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर शेयर किया है, जिसमें इंग्लैंड का बैटर एक के बाद दमदार शॉट्स लगाते हुए दिखाई दे रहा है। सॉल्ट ने प्रैक्टिस मैच में 41 गेंदों पर 78 रन की नाबाद पारी खेली। टी-20 क्रिकेट में फिल सॉल्ट की गिनती इंग्लैंड के सबसे विस्फोटक बल्लेबाजों में की जाती है। सॉल्ट अपनी तूफानी बैटिंग के दम पर किसी भी मैच का रुख पलटने का दमखम रखते हैं। सॉल्ट ने पिछले साल दिसंबर में वेस्टइंडीज के खिलाफ खेलते हुए लगातार दो सेंचुरी ठोकी थी। विकेटकीपर बैटर ने महज 48 गेंदों पर शतक जमाया था, जो इंग्लैंड की ओर से संयुक्त रूप से इस फॉर्मेट में सबसे तेज शतक भी है। केकेआर को आईपीएल 2024 के अपने पहले मैच में सनराइजर्स हैदराबाद से 23 मार्च को भिड़ना है। दोनों टीमों के बीच यह मुकाबला कोलकाता के ईडन गार्डन्स स्टेडियम में खेला जाएगा। केकेआर इसके बाद अपने दूसरे मुकाबले में 29 मार्च को आरसीबी से टक्कर लेती हुई नजर आएगी। यह मैच बेंगलुरु के एम चिननस्वामी क्रिकेट स्टेडियम में खेला जाएगा।

ऑस्ट्रेलिया में स्मिथ से ज्यादा सिंह उपनाम वाले क्रिकेटर, दक्षिण एशियाई खिलाड़ियों का बढ़ा दबदबा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। मेलबर्न में रहने वाली 14 वर्षीय बानी सिंह क्रैगीबर्न क्रिकेट क्लब से खेलती हैं और उनका सपना ऑस?ट्रेलिया के लिए सीनियर स्तर पर क्रिकेट खेलना है। बानी काउलफील्ड लीग में खेलता था तो मैं एकमात्र भारतीय मूल का खिलाड़ी था। क्रिकेट ऑस?ट्रेलिया के आंकड़ें देखें तो पिछले कुछ वर्षों में इस देश में काफी कुछ बदला है। 2023/24 सत्र के आंकड़ों के अनुसार ऑस्ट्रेलिया के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेलना है। तीरथ के पिता विशाल पटेल बताते हैं, उनके बेटे के पास आगे बढ़ने के जो अवसर मौजूद हैं, उनके समय पर नहीं थे आंकड़ों के अनुसार, 2007 से टेस्ट

ने सात वर्ष की आयु में क्रिकेट खेलना शुरू किया था और वह नौ वर्ष की उम्र से अंडर-14 टूर्नामेंट में खेल रही हैं। बानी के पिता तेजबीर सिंह ने बेटी को क्रिकेट खेलने के लिए प्रेरित किया पिछले कुछ वर्षों में ऑस?ट्रेलिया में काफी कुछ बदला है। 2023/24 सत्र के आंकड़ों के अनुसार ऑस?ट्रेलिया में पंजीकरण कराने वाले क्रिकेटरों में स्मिथ से ज्यादा सिंह उपनाम वाले क्रिकेटर रहे हैं। इस दौरान 4236 सिंह उपनाम वाले क्रिकेटरों ने पंजीकरण कराया है। क्रिकेट ऑस?ट्रेलिया के अनुसार सिंह उपनाम 2018-19 में स्मिथ को पछाड़कर आगे निकल गया और तभी से शीर्ष पर बना हुआ है। वह कहते हैं कि पिछले 10-15 वर्षों में जनसांख्यिकी रूप से ऑस?ट्रेलिया में क्रिकेट काफी बदल चुका है। जब मैं साउथ ऑस?ट्रेलिया में पंजीकरण कराने वाले क्रिकेटरों में स्मिथ से ज्यादा सिंह उपनाम वाले क्रिकेटर रहे हैं। इस दौरान 4236 सिंह उपनाम वाले क्रिकेटरों ने पंजीकरण कराया है। क्रिकेट आंकड़ों का प्रबंधन करने वाली वेबसाइट प्ले एचक्यू के अनुसार, भारतीय मूल के उपनामों में शर्मा, खान और कुमार शीर्ष 16 में सर्वाधिक पंजीकरण वाले उपनाम हैं। क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया के अनुसार, सिंह उपनाम 2018-19 में स्मिथ को पछाड़कर आगे निकल गया और तभी से शीर्ष पर बना हुआ है। इस समय दक्षिण एशिया समुदाय से करीब 70 हजार पंजीकृत प्रतिभागी हैं और 2027 तक ये संख्या एक लाख को पार कर जाएगी। सिडनी में रहने वाले 11 वर्षीय तीरथ पटेल कई क्लब से खेलते हैं और उनका सपना बिग बैश लीग और में ऑस?ट्रेलिया की पुरुष राष्ट्रीय टीम में दक्षिण एशियाई खिलाड़ियों की हिस्सेदारी 2.3 प्रतिशत रही है। वहीं वनडे में 5.2 प्रतिशत और टी-20 में ये 3.1 प्रतिशत है। महिला टीम में टेस्ट में 5.5 प्रतिशत, वनडे में 3.6 प्रतिशत और टी-20 में 3.8 प्रतिशत रही है। प्रथम श्रेणी क्रिकेट और बिग बैश लीग (पुरुष व महिला) में खेलने वाले प्रत्येक 100 खिलाड़ियों में दक्षिण एशियाई समुदाय की हिस्सेदारी 4.2 प्रतिशत है। ऑस्ट्रेलिया का विभिनन स्तर पर प्रतिनिधित्व कर चुके दक्षिण एशियाई मूल के खिलाड़ी उस्मान ख्वाजा, तनवीर सांघा, अलाना किंग, लीसा स्थालेकर, गुरिंदर सिंह संधू, हरकीरत बाजवा, हरजस सिंह यह भी पढ़े में बॉलर्स के लिए काल बनेगा ख्ख्ि का नया बैटर, प्रैक्टिस सेशन में की चौके-छक्कों की बरसात।

हार्दिक पांड्या और रोहित शर्मा ने मुंबई इंडियंस कैंप के दौरान एक-दूसरे को गले लगाया

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। हार्दिक पांड्या और रोहित शर्मा ने मुंबई इंडियंस कैंप के दौरान एक-दूसरे को गले लगाया जबकि दोनों के बीच रिश्ते में कड़वाहट की खबरों ने बाजार गर्म कर रखा है। पता हो कि हार्दिक पांड्या को रोहित शर्मा की जगह रोहित शर्मा को कप्तानी की जिम्मेदारी से आजाद किया गया, ताकि वो अपनी बतौर बल्लेबाज भूमिका का आनंद उठाएं और खूब रन बनाकर टीम को जीत दिलाएं। रोहित क्रिकेट से कुछ समय ब्रेक के बाद सोमवार को मुंबई इंडियंस खेमे से जुड़े। उन्होंने वापसी के बाद टीम बॉन्डिंग सेशन में रोहित शर्मा नजर नहीं आए थे। खबरों की मानें तो रोहित शर्मा ने अतिरिक्त अभ्यास करने के इरादे से यह फैसला लिया था। जब रोहित शर्मा को कप्तानी से हटाया गया था, तभी से मुंबई इंडियंस का माहौल तनातनी भरा

मुंबई इंडियंस का नया कप्तान बनाया गया है। मुंबई इंडियंस के कप्तान हार्दिक पांड्या और रोहित शर्मा का एक-दूसरे को गले लगाने वाला वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया है। ऐसी खबरें आ रही थी कि रोहित शर्मा की जगह हार्दिक पांड्या को कप्तान बनाए जाने के बाद दोनों खिलाड़?यों के बीच रिश्ता तनावपूर्ण है। मुंबई इंडियंस 24 मार्च को अपना पहला मैच गुजरात टाइटंस के खिलाफ खेलेगा। नेट्स पर जमकर पसीना बहाया। मुंबई इंडियंस शिविर में अभ्यास मैच से पहले दोनों खिलाड़ियों ने एक-दूसरे को गले लगाया और यह पल मुंबई इंडियंस कैमरे में कैद करके सोशल मीडिया पर शेयर कर दिया। यह वीडियो चंद लम्हों में आग की तरह फैला और वायरल हो गया। ध्यान हो कि हार्दिक पांड्या और रोहित शर्मा के बीच दरार की खबरों ने तब भी जोर पकड़ा, जब मुंबई इंडियंस की टीम अलीबाग पहुंची थी। इस नजर आ रहा है। रोहित शर्मा को कप्तानी से हटाने का कोई ठोस कारण सामने नहीं आया और मुंबई इंडियंस के फैंस के एक सेक्शन ने भी इस फैसले पर हैरानी जताई। खैर, मुंबई इंडियंस आईपीएल 2024 में अपने अभियान की शुरुआत 24 मार्च को गुजरात टाइटंस के खिलाफ करेगी। देखना दिलचस्प होगा कि हार्दिक पांड्या के नेतृत्व में टीम कैसा खेलेगी और रोहित शर्मा क्या कमाल कर पाएंगे।

नहीं रहे पाकिस्तान के पूर्व कप्तान सईद अहमद, 86 साल की उम्र में ली आखिरी सांस

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। पाकिस्तान के पूर्व कप्तान सईद अहमद का निधन हो गया है। 86 साल के सईद अहमद ने लाहौर में आखिरी सांस ली। पाकिस्तान की ओर से खेलते हुए साथ सईद ने गेंद से भी टीम के लिए दमदार प्रदर्शन किया और 22 विकेट अपनी झोली में डाले। सईद ने अपना डेब्यू वेस्टइंडीज के खिलाफ किया था और पूर्व कप्तान ने अपना आखिरी मैच साल 1973 में खे सईद

बतौर ऑलराउंडर उनका प्रदर्शन शानदार रहा। उन्होंने पाकिस्तान की ओर से 41 टेस्ट मैच खेले और अपने दमदार खेल से टीम को कई मैचों मे यादगार जीत दिलाई। सईद अहमद ने 86 साल की उम्र में आखिरी सांस ली। सईद ने इंटरनेशनल क्रिकेट में साल 1958 में डेब्यू किया था। उन्होंने पाकिस्तान की ओर से खेले 41 टेस्ट मैचों में 2991 रन ठोके। बल्ले के साथ-साथ सईद ने गेंद से भी टीम के लिए दमदार प्रदर्शन किया और 22 विकेट अपनी झोली में डाले। सईद ने अपना डेब्यू वेस्टइंडीज के खिलाफ किया था सईद अहमद ने 86 साल की उम्र में आखिरी सांस ली। सईद ने इंटरनेशनल क्रिकेट में साल 1958 में डेब्यू किया था। उन्होंने पाकिस्तान की ओर से खेले 41 टेस्ट मैचों में 2,991 रन ठोके। बल्ले के साथ-अहमद को पाकिस्तान टीम की कमान साल 1969 में सौंपी गई थी। इंग्लैंड टूर के बीच में हनीफ मोहम्मद की जगह पर सईद को पाकिस्तान की कप्तानी सौंपी गई थी। हालांकि, सईद को कप्तानी में अपने जौहर दिखाने का ज्यादा मौका नहीं मिला और वह केवल सिर्फ तीन ही मैचों में टीम की बागडोर संभाल सके। पीसीबी ने सईद अहमद के निधन की खबर पर दुख जाहिर किया साईद अहमद ने अपना इंटनरेशनल डेब्यू महज 20 साल की उम्र में किया था। पहले ही मैच में सईद ने हनीफ मोहम्मद संग मिलकर तीसरे विकेट के लिए 154 रन की साझेदारी निभाई थी। सईद ने इस मैच में 65 रन की शानदार पारी खेली थी। हालांकि, मैच का नतीजा ड्रॉ के रूप में निकला था।

इस सप्ताह की शुरुआत प्रसन्नता के साथ होगी। लेकिन बातचीत में संवत रहें। शिक्षा से जुड़े काम पर ध्यान देने की आवश्यकता है। धैर्य रखना होगा। भागदौड़ बनी रहेगी।

इस सप्ताह आत्म संवत रहने की आवश्यकता है। मन परेशान रहेगा। गुस्सा पर नियंत्रण रखना होगा। परिवार का साथ मिलेगा। लाभ के

मन में आशा-निराशा बनी रहेगी। नकारात्मक विचारों से बचें। स्वास्थ्य का ध्यान रखने की आवश्यकता है। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। नौकरी में कार्यभार में बढ़ोतरी

सप्ताह के शुरूआत से वाणी में मधुरता रहेगी, लेकिन धैर्यशीलता बनाए रखने की कोशिश करें। शिक्षा से जुड़े कामों में सफलता मिलेगी। संतान के स्वास्थ्य का ध्यान रखना

सप्ताह के पहले दिन से मन में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। नौकरी में तरक्की मिलने की संभावना है। शासन सत्ता का योग बन रहा है। भवन सुख मिलेगा। शिक्षा से जुड़े काम में

इस सप्ताह कार्यक्षेत्र में मेहनत ज्यादा होगी। परिवार की जिम्मेदारी बढ़ेगी। नौकरी में कार्यभार बढ़ेगा। मन परेशान हो सकता है। स्वभाव में

नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा, स्थान परिवर्तन भी हो सकता है। वाणी में कठोरता का भाव रहेगा, बातचीत में संयत रहें। वस्त्रों

इस सप्ताह परिवार के साथ धार्मिक यात्रा के योग बन रहे हैं। माता का सहयोग भी प्राप्त होगा। आत्मविश्वास बहुत रहेगा। ज्यादा उत्साही होने से बचें।

नौकरी में तरक्की होने की संभावना है। आत्मविश्वास बढ़ेगा। धर्म के प्रति श्रद्धाभाव बना रहेगा। मानसिक शांति रहेगी। गुस्सा पर काबू रखें।

परिवार में हंसी-खुशी का माहौल रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखना होगा। आत्मविश्वास बहुत रहेगा। नकारात्मक विचारों से बचाव

मन खुश रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मानसिक शांति रहेगी लेकिन असंतोष भी रहेगा। परिवार में शांति बनी रहेगी। पिता का सहयोग मिलेगा।

पारिवारिक जिम्मेदारी बढ़ सकती हैं। मान-सम्मान बढ़ेगा। नौकरी में पदोन्नति के योग हैं। आत्मविश्वास बन रहेगा। शिक्षा से जुड़े काम सफल होंगे।

इन पांच विदेशी खिलाडियों की बोलेगी आईपीएल 2024 में तूती

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। की किस्मत पलटेगा यह धाकड़ बल्लेबाज!स्पोर्ट्स डेस्क, नई दिल्ली। आईपीएल 2024 का रोमांच

अब महज कुछ घंटों की दूरी पर है। 22 मार्च से 10 टीमों के बीच रोमांचक घमासान शुरू होने जा रहा है। टूर्नामेंट में भारतीय खिलाडि.यों के प्रदर्शन पर तो हर किसी की निगाहें रहने ही वाली हैं। हालांकि, कुछ ऐसे विदेशी नाम भी हैं, जो इंडियन प्रीमियर लीग के 17वें सीजन में अपने दमदार खेल से महफिल लूट सकते हैं। इस पोस्ट में ऐसे ही पांच प्लेयर्स के बारे में बात करेंगे, जो इस सीजन अपने धांसू खेल से टीम की किस्मत को पलट सकते हैं आईपीएल 2024 का आगाज 22 मार्च से होने जा रहा है। टूर्नामेंट के पहले मैच में चेनन्ई सुपर किंग्स की भिड़ंत रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर के साथ होनी है। हर सीजन की तरफ इस बार भी कुछ विदेशी खिलाडि.यों के प्रदर्शन पर हर किसी की निगाहें रहने वाली हैं। कैमरून ग्रीन आरसीबी की ओर से आईपीएल 2024 में जमकर धमाल मचा सकते हैं। मिचेल मार्श आईपीएल 2024 में दिल्ली कैपिटल्स के लिए ट्रंप कार्ड साबित हो सकते हैं। पिछले एक साल में मार्श ने खेली 17 पारियों में 474 रन ठोके हैं। इस दौरान उनका स्ट्राइक रेट 158 का रहा है। मार्श का रिकॉर्ड पावरप्ले में और भी धांसू रहा है और उन्होंने 158 के स्ट्राइक रेट से रन कूटे हैं। बल्ले के साथ-साथ मार्श गेंद से भी कारगर साबित हो सकते हैं। कैमरून ग्रीन आईपीएल 2024 में रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर की किस्मत को पलटकर रख सकते हैं। ग्रीन को आरसीबी ने ट्रेड करते हुए अपनी टीम से जोड़ा है। ग्रीन अपनी विस्फोटक बल्लेबाजी के लिए तो मशहूर हैं ही, इसके साथ ही वह गेंद से भी कमाल दिखा सकते हैं। ग्रीन अगर उम्मीद के मुताबिक प्रदर्शन करने में सफल रहे, तो बैंगलोर का ट्रॉफी का सूखा इस बार खत्म हो सकता है। वर्ल्ड कप 2023 में अपनी गेंदबाजी से जमकर महफिल लूटने वाले साउथ अफ्रीका के तेज गेंदबाज गेराल्ड कोएत्जी पर भी हर किसी की निगाहें रहने वाली हैं। कोएत्जी अपनी रफ्तार के साथ-साथ शानदार लाइन एंड लेंथ के साथ गेंदबाजी कर सकते हैं। जसप्रीत बुमराह संग मिलकर यह युवा तेज गेंदबाज बल्लेबाजों के लिए काल साबित हो सकता है। साउथ अफ्रीका के विकेटकीपर बल्लेबाज हेनरिक क्लासन पिछले एक साल से जबरदस्त फॉर्म में हैं। क्लासन आईपीएल 2024 में सनराइजर्स हैदराबाद के लिए तुरुप का इक्का साबित हो सकते हैं। क्लासन के बल्ले से पिछले एक साल में टी-20 क्रिकेट में 188 के स्ट्राइक रेट से 1119 रन निकले हैं। मध्यक्रम में बल्लेबाजी करते हुए क्लासन का स्ट्राइक रेट 174 का रहा है।

सम्पादकीय

भारत के सैन्य इतिहास की एक क्रांतिकारी घटना

संक्रांति के चार दिन बाद (उस साल संक्रांति 10 जनवरी को थी) 14 जनवरी को मिली भयानक हार ने ही मराठी कहावत 'संक्रांत झाला' को जन्म दिया। मराठे तो 10 साल में फिर खड़े हो गए, भारत के डिफैक्टो शासक बन गए, लेकिन जिन राजाओं ने उनका साथ नहीं दिया उन्होंने यह तय कर दिया था कि भारत को फिर स्वाभिमान से खड़े होने में सदियां लगेंगी।24 जनवरी 1761 को नाना साहब पेशवा (प्रथम) को यह गुप्त संदेश तब मिला था जब वे अपनी सेना के साथ उत्तर भारत की ओर बढ़ रहे थे। आज उत्तर भारत में हम लोग ठिठुर रहे हैं। ठंड की वजह से घरों में दुबके हैं, लेकिन 263 साल पहले आज ही के दिन मराठे अपने घरों से 1500 किलोमीटर दूर पानीपत में एक विदेशी ताकत से लड़ रहे थे। न उनके साथ जाट थे, न सिख और का भी दुश्मन पर असर नहीं पड़ा। इन्हें अनाज के कुछ दाने दिए गए और एक घूंट पानी। इसके बाद इन सब के सिर कलम कर दिए गए। अफगान, रोहिल्ले, मुगल और लखनऊ के शाह शुजाउद्दौला की सेना इन पर टूट पड़ी थीं। हर अफगान सरदार के तंबू के बाहर एक कल्ला मीनार (कटे सिरों का टावर) थी। यही नहीं, गुलाम हुसैन ने सियार-उल-मुतखरीन में लिखा है कि बैलगाड़ियों में सवार करीब के 22 हजार महिलाओं और बच्चों को भी गुलाम के तौर पर भेजा गया था। ये महिलाएं वे थीं जो मराठा सेना के साथ उत्तर भारत की तीर्थयात्रा पर आई थीं। संभवतः इन गुलामों को काबुल के बाजारों में कुछ सिक्कों के बदले बेच दिया गया। किसी तरह जो बच सके उन्होंने बुरी तरह घायल मराठों की मात्र जाट राजा सूरजमल ने मदद की। महाराज

न राजपूत। हां, विदेशियों के साथ परंपरा के मुताबिक भारत के लोग जरूर थे। मराठों के पास तो खाने को भी कुछ नहीं था और तन पर जो कपड़े थे वे भी उत्तर भारत की इस सर्दी से निपटने के लिए नाकाफी थे। नाना साहब को मिले गुप्त संदेश से साफ था कि मराठों की बुरी हार हुई है। जिन दो मोतियों की बात संदेश में की गई थी वे थे- मराठा सेना का नेतृत्व कर रहे सदाशिव राव भाऊ और खुद पेशवा के बेटे विश्वास राव। युद्ध के बाद कम से कम 10 हजार मराठा सैनिकों को बंदी बनाया गया था। आत्मसमर्पण सूरजमल ने उन्हें आश्रय दिया और हर एक को एक रुपया और कपड़े देकर पुणे भेजा।संक्रांति के चार दिन बाद (उस साल संक्रांति 10 जनवरी को थी) मिली इस भयानक हार ने ही मराठी कहावत 'संक्रांत झाला' को जन्म दिया। मराठे तो 10 साल में फिर खड़े हो गए, भारत के डिफैक्टो शासक बन गए लेकिन जिन राजाओं ने उनका साथ नहीं दिया उन्होंने यह तय कर दिया कि भारत को फिर स्वाभिमान से खड़े होने में सदियां लगेंगी।पानीपत में प्राण गंवाने वाले बलिदानियों को श्रद्धांजलि।

उत्साहित करने के साथ डराती भी है तीन दशक की यह यात्रा

तीन दशक पहले अमेरिका में संपन्न सुपर हाईवे सम्मेलन की छोटी-सी शुरुआत, जिस तरह इंटरनेट आधारित अर्थव्यवस्था के विविध सोपानों, जैसे- नए वेब ब्राउजर, मोबाइल इंटरनेट से लेकर ऑनलाइन पेमेंट, युद्धों में तकनीक का इस्तेमाल और अब जेनरेटिव एआई तक जा पहुंची है, वह उत्साहित करने के साथ डराती भी है।तीस साल पहले की बात है। जनवरी का ग्यारहवां दिन था। जब सरकार, शिक्षा और संचार क्षेत्र की दो दर्जन से ज्यादा हस्तियां कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी में आयोजित एक भविष्य-उन्मुखी सम्मेलन में शामिल हुई थीं, जिसका नाम था-'सुपर हाईवे समिट'। इससे जुड़ा एक दिलचस्प वाकया है। सम्मेलन का आयोजन दरअसल टेलीविजन, आर्ट्स व साइंसेज अकादमी के रिचर्ड फ्रैंक कर रहे थे, जिन पर चुटकी लेते हुए तत्कालीन अमेरिकी उपराष्ट्रपति अल गोर ने कहा, 'जो टेलीविजन पर नहीं आया, समझो हुआ ही नहीं।' ठीक ऐसा ही कुछ आप आज 2024 के लिए भी कह सकते हैं कि, जो इंटरनेट व सोशल मीडिया पर नहीं है, उसका अस्तित्व ही नहीं है। दुनिया में इंटरनेट के विकास का अलबत्ता एक लंबा इतिहास रहा है।एक तरह से देखें, तो सुपर हाईवे समिट के साथ ही इंटरनेट के सुपरहाईवे और इंटरनेट आधारित इकनॉमी की शुरुआत देखी जा सकती है। 1994 में एनसीएसए मोजैक और नेटस्केप के वेब ब्राउजर शुरू होने के बाद माइक्रोसॉफ्ट विंडोज एक्सप्लोरर यूजर्स के लिए डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू यानी वर्ल्ड वाइड वेब लाया। इस तरह एक छोटी-सी शुरुआत थोड़ा झिझकते हुए वैश्विक इंटरनेट इकनॉमी की तरफ बढ़ी।2024 में विश्व की औसत आयु करीब साढ़े 30 वर्ष अनुमानित है। इससे जाहिर होता है कि दुनिया की आठ अरब से ज्यादा आबादी का करीब आधा हिस्सा इंटरनेट के युग में ही पैदा हुआ है। पूरी दुनिया में इंटरनेट का उपयोग करने वालों की संख्या 5.3 अरब से ज्यादा है और यह लगातार बढ़ भी रही है। गूगल जो एक संज्ञा है, जवाब खोजने की क्रिया बन गई है। वेब (जाल) केवल वही नहीं रह गया, जो मकड़ियां बुनती हों। फिल्में व संगीत स्ट्रीम होने लगे हैं। सामाजिकता निभाने के लिए सोफे से उठने तक की जरूरत नहीं पड़ रही है।अभिव्यक्तियां संक्षिप्त होती जा रही हैं। अमेरिकी विज्ञान गल्प कथाकार इसाक असिमोव की सभी भविष्यवाणियां अब मोबाइल की स्क्रीन पर साफ दिख रही हैं। हालांकि बदलाव का चक्र काफी छोटा रहा है। सबसे ज्यादा उपयोग में लाए गए एप्लीकेशन और सबसे बड़ी इंटरनेट आधारित कंपनियां हालिया इतिहास का अंग हैं। 1994 तक अमेजॅन की पहचान दक्षिण अमेरिका की केवल एक शांत नदी होने तक सीमित थी। उबर कोई सवारी नहीं, बल्कि एक विशेषण था। मेटा (पूर्व नाम फेसबुक), एक्स (पूर्व नाम ट्विटर), सर्वव्यापी व्हाट्सऐप, स्पॉटिफाई, शॉपिफाई, बुकिंग डॉट कॉम, एयरबीएनबी, नेटफ्लिक्स इत्यादि कॉरपोरेट की दुनिया की जेनरेशन जेड में शुमार होते हैं। तकनीकी पहुंच को भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखें, तो अलग ही कहानी दिखेगी।अलेक्जेंडर ग्राहम बेल को 1876 में टेलीफोन के लिए पेटेंट मिला। लेकिन, दो-तिहाई भारतीयों को 1990 के दशक तक फोन नहीं मिल सका था। इंटरनेट भी भारतीयों के नसीब में तब आया, जब 1995 में वीएसएनएल द्वारा मुहैया कराया गया। पर आज करीब 1.2 अरब भारतीय मोबाइल फोन और 80 करोड़ भारतीय इंटरनेट का उपयोग कर रहे हैं। 53 करोड़ से ज्यादा लोग व्हाट्सऐप पर हैं और यू-ट्यूब के कुल 2.7 अरब यूजर्स का पांचवां हिस्सा भारत में है।इंटरनेट का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव ऑनलाइन भुगतानों में इसके बढ़ते उपयोग के रूप में दिखता है। भारत का डिजिटल सार्वजनिक मॉडल, आधार द्वारा प्रदत्त पहचान की बदौलत अब विकासशील दुनिया के लिए आदर्श बन चुका है। भारतीय राष्ट्रीय पेमेंट कॉरपोरेशन द्वारा दर्ज किए गए आंकड़ों के अनुसार, दिसंबर, 2023 में करीब 50 करोड़ आईएमपीएस भुगतान हुए। वहीं सर्वव्यापी यूपीआई प्लेटफॉर्म पर साढ़े 11 अरब भुगतान हुए। हालांकि वैश्विक आर्थिक विकास में इंटरनेट के योगदान पर निरंतर बहस चल रही है। मैकिंसे के अध्ययन के अनुसार, 2011 में इंटरनेट उपयोगकर्ता दो अरब थे, जबकि इंटरनेट आधारित इकनॉमी ने करीब 80 खरब डॉलर का योगदान दिया। विश्व बैंक की हालिया रिपोर्ट के अनुसार, डिजिटल इकनॉमी वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (वैश्विक जीडीपी) में 15 फीसदी से ज्यादा योगदान देती है और यह दुनिया की वास्तविक जीडीपी से ढाई गुना ज्यादा तेजी से बढ़ रही है।ऑनलाइन भुगतानों से ग्राहक व कंपनियां, दोनों को फायदा पहुंचा है। बैंकों को बगैर ज्यादा शाखाएं खोले, बाजार में अपनी मौजूदगी बढ़ाने का मौका मिला है। म्यूचुअल फंड ने ऑनलाइन पहुंच बनाकर बचतकर्ताओं को फंड व निवेश के नए अवसर देकर अपनी पहुंच बढ़ाई है। लेकिन इसमें जोखिम भी हैं। जैसा अमेरिका में देखा गया, जहां जमाकर्ताओं ने कुछ ही घंटों में अपने खाते खाली कर दिए। हालांकि अब कंपनियां और नियामक भी इन जोखिमों से वाकिफ हैं।यूक्रेन और पश्चिम एशिया के युद्धों में इंटरनेट आधारित आक्रामक और रक्षात्मक क्षमताएं बढ़ती दिखी हैं। आज चाहे लाल सागर संघर्ष हो, इस्राइल-फलस्तीन युद्ध हो या फिर रूस-यूक्रेन युद्ध, इंटरनेट आधारित तकनीकों ने एक नए उद्योग का आकार लिया है। हैरत नहीं कि मानव रहित हवाई वाहन और साइबर सुरक्षा सैन्य-उद्योग तंत्र के सबसे उभरते हुए पहलू रहे। ब्रिटिश उद्यमी मुस्तफा सुलेमान, जिसे 'आने वाली लहर' कहते हैं, दुनिया ठीक इसी कगार पर पहुंच चुकी है। निजी इक्विटी फंड, कंपनियां और सरकारें दो सौ अरब डॉलर से ज्यादा के निवेश के साथ अगली बड़ी छलांग के लिए तैयार हैं, जो जेनरेटिव एआई और कृत्रिम बुद्धिमत्ता से संबंधित हैं।एआई से पूरी दुनिया को काफी उम्मीदे हैं। खासकर पहुंच, कौशल व अवसरों के क्षेत्र में विषमताओं को खत्म करने में। हालांकि यह आर्थिक, राजनीतिक और अस्तित्व संबंधी चिंताएं भी पैदा करता है। मानवीय प्रयासों की भूमिका सीमित होने के विचार के विभिन्न देशों में गंभीर निहितार्थ निकाले जा रहे हैं। राजनीतिक स्तर पर इससे ध्रुवीकरण के बढ़ने और सोशल मीडिया पर गुस्से व दुख के विस्तार की आशंका है।कृत्रिम बुद्धिमत्ता के खतरे महज कल्पना नहीं, बल्कि वास्तविक भी हैं, जो नियामकों को इस पर नियंत्रण रखने की जरूरत को इंगित भी करते हैं। इस समस्या के समाधान की कोई गारंटी तो नहीं, पर अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा निकाय द्वारा परमाणु प्रतिष्ठानों के लिए सुझाया गया मार्ग एक अच्छा उपाय जरूर हो सकता है। यह ठीक वैसा ही उपाय है, जैसा सुनामी आने पर प्रतिबंध और चेतावनी की व्यवस्था होती है। हालांकि जरूरी नहीं कि यह उपाय काफी साबित हो। अलबत्ता इसके लिए वैश्विक समन्वय की जरूरत होगी। और, अगर दुनिया के अग्रणी नेताओं के पास इसका कोई हल नहीं है, तो वे एआई से परामर्श कर सकते हैं।

इंडिया' गठबंधन की बढ़ती मुश्किलें, प्राण प्रतिष्ठा पर फिर धारा के विपरीत

विपक्षी दलों ने श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा में शामिल होने का निमंत्रण ठुकराकर समय की धारा को फिर न पहचानने का प्रमाण दिया है।चुनाव आयोग लोकसभा चुनाव की घोषणा भले अभी दो महीने बाद करेगा, पर देश की पूरी राजनीति इसके इर्द-गिर्द घूम रही है। इस समय राष्ट्रीय स्तर पर दो प्रमुख समूह भाजपा के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन या राजग तथा 'इंडिया' गठबंधन हैं। इन दो प्रमुख समूहों की स्थिति के आकलन से लोकसभा चुनाव की अस्पष्ट ही सही, लेकिन तस्वीर जरूर बन जाती है। भाजपा ने कहा है कि वह 2024 में 50 फीसदी वोट का लक्ष्य लेकर बढ़ रही है। जबकि, 'इंडिया' गठबंधन के घटक दलों ने श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा में शामिल होने का निमंत्रण ठुकराकर समय की धारा को फिर न पहचानने का

प्रमाण दिया है। खुद कांग्रेस के कुछ नेताओं ने सोनिया गांधी और मल्लिकार्जुन खरगे द्वारा निमंत्रण ठुकराने पर दुख भी प्रकट कर दिया है।वर्ष 2014 में नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता तथा उनके नेतृत्व में भाजपा के सत्ता में आने का मूल कारण ही हिंदुत्व प्रेरित राष्ट्रीय चेतना तथा भारत को अपनी पहचान के साथ विश्व के उच्चतम शिखर पर देखने का जनता के अंदर पैदा हुआ प्रबल भाव ही था। 2004 में सत्ता में आने पर यूपीए अध्यक्ष के रूप में सोनिया गांधी के प्रभाव में चलने वाली मनमोहन सिंह सरकार ने स्वयं को सेक्यूलर साबित करने के लिए सच्चर आयोग से लेकर अल्पसंख्यक मंत्रालय का गठन तथा रामसेतु और राम को कल्पना का विषय न्यायालय में बताकर अपनी स्थिति धीरे-धीरे कमजोर करनी शुरू कर दी थी।सत्ता से बाहर होने के बावजूद कांग्रेस, जिसका वास्तविक नेतृत्व सोनिया गांधी और राहुल गांधी के हाथों में दिखता है, प्रकारांतर से इस नीति को आगे बढ़ा रही है। एक ओर देश का राममय वातावरण और दूसरी ओर राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा की तुलना करें, तो दिख जाएगा कि विचार के स्तर पर बिल्कुल दो धाराएं देश में बन चुकी हैं। 'इंडिया' गठबंधन अब तक एक इकाई नहीं बन सका है, जिसका प्रमाण बीती 12 जनवरी को आयोजित इसकी बैठक में भी मिला, जिसमें गठबंधन के कई प्रमुख नेता शामिल नहीं हुए। दूसरी ओर नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के अंदर कोई विभाजन नहीं है।चुनाव में नेतृत्व का चेहरा अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। नरेंद्र मोदी के समानांतर विपक्ष में कोई नेता नहीं, जिसे जनता उनके समक्ष या बड़ा मान सके। 'इंडिया' गठबंधन में नेतृत्व को लेकर व्यापक मतभेद हैं, क्योंकि अनेक नेताओं की महत्वाकांक्षा प्रधानमंत्री बनने की है। प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी तीसरी पारी में भारत को विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था तथा 2047 तक वैश्विक महाशक्ति बनाने का लक्ष्य निर्धारित कर दिया है। वहीं, विपक्ष मोदी, संघ और भाजपा विरोध की नीतियों तक सीमित है। विपक्षी नेताओं ने जिस तरह सनातन और हिंदुत्व से लेकर उत्तर के राज्यों को गोमूत्र की संज्ञा देने तथा उत्तर और दक्षिण के बीच विभाजन पैदा करने संबंधी बयान दिए हैं, उनसे देश के बहुमत में जो नाराजगी पैदा हुई है, उसे संतुलित करने के लिए जितने बड़े मुद्दे और जैसे चेहरे चाहिए, विपक्ष में उनका नितांत अभाव है।विपक्ष की सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस है। कर्नाटक और तेलंगाना विधानसभा चुनाव में विजय से यह निष्कर्ष निकाला जा रहा है कि आगामी लोकसभा चुनाव में कांग्रेस 2019 से बेहतर प्रदर्शन करेगी। 2019 में भाजपा द्वारा जीती गई 303 लोकसभा सीटों में तेलंगाना से चार मिली थी, हालांकि तेलंगाना के इस बार के विधानसभा चुनाव में भाजपा को पिछली बार की तुलना में ज्यादा सीटें मिली हैं। कर्नाटक में पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा को 51.38 फीसदी वोट तथा 25 सीटें मिली थीं, जबकि कांग्रेस के पास मात्र एक सीट थी। भाजपा के लिए अच्छी बात यह है कि 2023 विधानसभा चुनाव में यहां उसकी सीटें घटी, वोट नहीं। हां, कांग्रेस के मतों में पांच फीसदी की बढ़ोतरी अवश्य हुई। दोनों राज्यों में मुसलमानों का मत कांग्रेस के पक्ष में ध्रुवीकृत हुआ है। मुस्लिम मत खिसकने के कारण ही कर्नाटक में जद-एस भाजपा के साथ आया है।भाजपा तमिलनाडु पर खास ध्यान दे रही है और चर्चा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वाराणसी के अलावा रामनाथपुरम से भी चुनाव लड़ सकते हैं। यदि ऐसा होता है और तमिलनाडु में स्थिति बदलती है, तो इसका असर पूरे दक्षिण भारत में होगा और यदि ऐसा नहीं हुआ, तब भी भाजपा जितना ध्यान दक्षिण पर दे रही है, वह बिल्कुल अप्रभावी तो साबित नहीं हो सकता।

कर्ज के चंगुल में फंसी दुनिया के बीच भारतीय रिजर्व बैंक ने उठाए महत्वपूर्ण कदम

आईएमएफ का यह कहना कि पिछले वर्ष कुल वैश्विक कर्ज वैश्विक जीडीपी का 238 फीसदी था, बताता है कि पूरी दुनिया कर्ज के जाल में किस कदर उलझी है। ऐसे में, भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा देश में असुरक्षित घरेलू कर्ज को, जो वित्तीय अस्थिरता को बढ़ा भी सकते हैं, रोकने के लिए उठाए गए कदम महत्वपूर्ण हैं।वर्तमान वित्तीय वर्ष की शुरुआत में हमने देखा कि वैश्विक अर्थव्यवस्था राजकोषीय और मौद्रिक नीति दोनों उपायों से मंदी से उबर रही थी। दरअसल, वित्त वर्ष 2022 में मुद्रास्फीति से निपटने के लिए विभिन्न देशों में ब्याज दरें बढ़ाई गईं, सार्वजनिक ऋण में भारी कमी आई और सरकारी वित्त में सुधार भी हुआ था। इस आर्थिक सुधार से अंतरराष्ट्रीय व्यापार और निवेश में कुछ हद तक स्थिरता भी संभव लग रही थी। लेकिन आर्थिक सुधारों के लिए विभिन्न देशों में अपनाई गई नीतियों में काफी फर्क भी दिखा।भारत जैसी उभरते बाजारों वाली विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में व्यापक आधार वाले आर्थिक सुधार दिखे। लेकिन कम आय वाली विकासशील अर्थव्यवस्था वाले देशों ने व्यापक आर्थिक स्थिरता का अनुभव किया, जिससे अत्यधिक सामाजिक और आर्थिक संकट पैदा हुए। संसाधनों के अभाव वाले क्षेत्रों की संसाधन-

बहुल क्षेत्रों तक पहुंच कैसे सुनिश्चित की जाए, इस संदर्भ में हाल के समय में कई वैश्विक नीतिगत चर्चाएं भी हुईं। नई दिल्ली में आयोजित जी-20 सम्मेलन में मजबूत, सतत, संतुलित और समावेशी विकास की जरूरत पर बल दिया गया। हालांकि इस स्थिति की जटिलता के कई आयाम हैं।ऐसा ही एक महत्वपूर्ण मुद्दा है बढ़ते वैश्विक कर्ज का। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, पिछले वर्ष कुल वैश्विक कर्ज कुल वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (वैश्विक जीडीपी) का 238 फीसदी था, जो 2019 की तुलना में नौ फीसदी ज्यादा था। अगर इन्हीं आंकड़ों को डॉलर में देखें, तो यह कर्ज 2,350 खरब डॉलर था, जो 2021 की तुलना में करीब दो सौ अरब डॉलर ज्यादा था। इसमें सबसे ज्यादा चिंता का विषय घरेलू और निजी क्षेत्र का बढ़ता कर्ज है। हालांकि 2008 की वैश्विक मंदी के बाद से घरेलू कर्ज पर पूरी तरह से निगरानी रखी गई है, लेकिन फिर भी पिछले पंद्रह वर्षों में यह काफी तेजी से बढ़ा है।कोविड महामारी ने तो इसे और भी तेजी से बढ़ाया है। उल्लेखनीय है कि घरेलू कर्जों का उच्च स्तर वित्तीय अस्थिरता का एक प्रमुख स्रोत हो सकता है। हालांकि वैश्विक नीतिगत चर्चाओं में कोविड महामारी के बाद वित्तीय स्थिरता को वापस लाने पर फोकस किया गया है, लेकिन जब बात घरेलू और निजी क्षेत्र के कर्ज की हो, तो ज्यादा सोच-विचार जरूरी हो जाता है। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि घरेलू कर्ज की प्रकृति, विशेषताएं और प्रभाव विभिन्न देशों में भिन्न-भिन्न होते हैं।उल्लेखनीय है कि अगर असुरक्षित घरेलू कर्ज ज्यादा बढ़ जाते हैं, तो वित्तीय स्थिरता के लिए बड़ा खतरा पैदा हो जाता है। दूसरी तरफ, सुरक्षित घरेलू कर्ज, मसलन रियल एस्टेट के लिए लिया गया कर्ज, वास्तविक मांग बढ़ा सकते हैं और घरेलू संपत्ति पैदा करते हैं। कर्ज निर्माण की इस प्रक्रिया की विस्तृत समझ रखना जरूरी है। इस समस्या की भयावहता को समझने के लिए आइए, भारत सहित कुछ प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में घरेलू कर्ज की स्थिति को दो काल-खंडों 2008 और 2022 में समझते हैं। 2008 वह वर्ष था, जब पूरी दुनिया में मंदी छाई थी, जबकि 2022 कोविड महामारी के ठीक बाद का वर्ष था। दोनों वे वर्ष थे, जब देशों की अर्थव्यवस्थाओं में सुधार दिखा। दोनों काल-खंडों के बीच कनाडा, फ्रांस, इटली और जापान में घरेलू कर्ज तेजी से बढ़ा।अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के आंकड़ों के अनुसार, कनाडा, फ्रांस, इटली और जापान में यह 2008 के क्रमशः 83.47, 48.60, 38.98 और 60.27 फीसदी से बढ़कर क्रमशः 102.38, 66.14, 41.72 और 68.15 फीसदी हो गया। जबकि भारत में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के अनुपात में घरेलू कर्ज सर्वाधिक न्यूनतम में से रहा, जो वित्त वर्ष 2022 के जीडीपी का करीब 35 फीसदी था और 2008 से 2022 के दौरान इसमें तेज गिरावट देखने को मिली। भारत में घरेलू कर्ज 2008 में जीडीपी का 40.85 फीसदी था, जो 2022 में 35.56 फीसदी रह गया। अमेरिका और ब्रिटेन में भी इस कालखंड में घरेलू कर्ज में कमी आई।भारत में घरेलू क्षेत्र से उत्पन्न होने वाले असुरक्षित कर्ज के जोखिमों को रोकने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा हाल ही में उठाए गए कदम उल्लेखनीय हैं। असुरक्षित कर्ज पर अंकुश लगाने के लिए केंद्रीय बैंक ने नवंबर, 2023 में बैंकों और गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) दोनों के लिए क्रेडिट कार्ड जैसे असुरक्षित उपभोक्ता कर्ज पर जोखिम का भार 25 फीसदी तक बढ़ा दिया है। केंद्रीय बैंक के इस कदम का उद्देश्य महज इतना है कि देश के वित्तीय क्षेत्र को घरेलू क्षेत्र से उत्पन्न होने वाले किसी भी बड़े वित्तीय जोखिम से बचाया जाए। हालांकि भारत का घरेलू कर्ज ज्यादा नहीं है, फिर भी केंद्रीय बैंक द्वारा दिखाई जा रही सतर्कता का महत्व है। इससे जोखिमों को कम करने और वित्तीय क्षेत्र की स्थिरता सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।सारांश के तौर पर कह सकते हैं कि पूरी दुनिया में बढ़ते घरेलू कर्ज से वैश्विक अर्थव्यवस्था में अस्थिरता आएगी, जिसका नकारात्मक असर भारत समेत सभी उभरते बाजारों वाली अर्थव्यवस्थाओं पर भी पड़ेगा।

खुद को बदल रहा गूगल, एक बड़े फैसले से साफ है संदेश

गूगल द्वारा थर्ड पार्टी कुकीज को समाप्त करने का निर्णय अरबों डॉलर के ऑनलाइन विज्ञापन उद्योग के इतिहास का सबसे बड़ा बदलाव होगा। गूगल वेब पर अपने

उपयोगकर्ताओं को कैसे ट्रैक करता है, इसमें वह कई बड़े बदलाव कर रहा है। इसी कड़ी में गूगल ने एक सीमित परीक्षण शुरू किया है, जिसमें वह अपने क्रोम ब्राउजर का उपयोग करने वाले एक फीसदी लोगों के लिए थर्ड पार्टी कुकीज को प्रतिबंधित करेगा। उल्लेखनीय है कि क्रोम दुनिया भर में सबसे ज्यादा लोकप्रिय ब्राउजर है। इस वर्ष के अंत तक गूगल का इरादा है कि वह सभी क्रोम उपयोगकर्ताओं के लिए थर्ड पार्टी कुकीज को समाप्त कर देगा। विश्व के 600 अरब डॉलर वार्षिक ऑनलाइन विज्ञापन उद्योग के इतिहास में यह सबसे बड़े बदलावों में से एक होगा।नब्बे के दशक में कंप्यूटर इंटरनेट की दुनिया में एक छोटी-सी पहल ने लोगों के वेबसाइट इस्तेमाल के अनुभव को उल्लेखनीय तरीके से बदल दिया और इसका श्रेय जाता है नेटवर्क इंजीनियर लू मोंटुल्ली को, जिन्होंने एचटीटीपी कुकी का आविष्कार किया। इस कुकी द्वारा ही हमारा वेबसाइट अनुभव नियंत्रित होता है। कुकीज को कई अन्य नामों से भी जाना जाता है, जैसे अति आवश्यक कुकीज, वर्किंग कुकीज, फर्स्ट पार्टी कुकीज, सेकेंड पार्टी कुकीज तथा थर्ड पार्टी कुकीज आदि। वर्तमान में गूगल द्वारा थर्ड पार्टी कुकीज का सपोर्ट बंद किया जा रहा है, जिससे ऑनलाइन विज्ञापन के बाजार में बड़ी हलचल मची हुई है। सामान्य तौर पर कुकीज ऑनलाइन वेबसाइट पर हमारी गतिविधियां ट्रैक करती हैं और उन गतिविधियों से कुकीज देने वाली वेबसाइट को अवगत कराती हैं।

संक्षिप्त समाचार

'ये अभिव्यक्ति की आजादी पर खतरा', केंद्र की फैक्ट चेक यूनिट पर सुप्रीम कोर्ट ने लगाई रोक

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने पीआईबी की फैक्ट चेक यूनिट स्थापित करने पर रोक लगा दी है। सुप्रीम कोर्ट ने आईटी संशोधन नियम 2023 के तहत केंद्र सरकार द्वारा फैक्ट चेक यूनिट (इण्ळ) की 20 मार्च की अधिसूचना पर रोक लगा दी है। सुप्रीम कोर्ट ने फैक्ट चेक यूनिट की अधिसूचना पर तब तक रोक लगा दी जब तक बॉम्बे हाई कोर्ट सूचना

प्रौद्योगिकी नियम संशोधन 2023 की चुनौतियों का फैसला नहीं कर लेता। एफसीयू की स्थापना हाल ही में संशोधित आईटी नियमों के तहत अपने व्यवसाय से संबंधित सोशल मीडिया पर सामग्री की निगरानी के लिए की गई थी। बता दें कि ये पीआईबी की फैक्ट चेक यूनिट ऑनलाइन कंटेंट की निगरानी के लिए बनाया गया था। इसके तहत ये यूनिट सरकार के खिलाफ कोई भी गलत जानकारी का फैक्ट चेक करती और गलत पाए जाने पर उसे फिर पब्लिश करने पर रोक लगा देती। सुप्रीम कोर्ट ने अधिसूचना पर तब तक रोक लगा दी जब तक बॉम्बे हाई कोर्ट सूचना प्रौद्योगिकी नियम संशोधन 2023 की चुनौतियों का फैसला नहीं कर लेता। एफसीयू की स्थापना हाल ही में संशोधित आईटी नियमों के तहत अपने व्यवसाय से संबंधित सोशल मीडिया पर सामग्री की निगरानी के लिए की गई थी। मुख्य न्यायाधीश डी वाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने बॉम्बे उच्च न्यायालय के 11 मार्च के आदेश को रद्द कर दिया, जिसने केंद्र सरकार के बारे में सोशल मीडिया पर फर्जी और गलत सामग्री की पहचान करने के लिए संशोधित आईटी नियमों के तहत एफसीयू की स्थापना पर अंतरिम रोक लगाने से इनकार कर दिया था। पीठ ने कहा, "हमारा मानना है कि उच्च न्यायालय के समक्ष आने वाले प्रश्न संविधान के अनुच्छेद 19(1)(ए) के मूल प्रश्नों से संबंधित हैं। हमारा विचार है कि अंतरिम राहत के आवेदन की अस्वीकृति के बाद 20 मार्च, 2024 की अधिसूचना पर रोक लगाने की जरूरत है।

श्रीराम जन्म एवं श्रीकृष्ण जन्म की कथा सुनकर भावविभोर हुए श्रोता

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नोएडा। श्रीराम मित्र मंडल नोएडा के तत्वावधान में सेक्टर-20 के श्री हनुमान मंदिर में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान यज्ञ में

कथावाचक आचार्य विष्णुकांत जी पाराशर वृंदावन धाम ने चौथे दिन की कथा में भगवान वामन अवतार के बारे में बताया।उन्होंने भगवान राम और भगवान कृष्ण जन्म की कथा सुनाकर श्रोताओं को भावविभोर कर दिया।भगवान जन्म समारोह को धूमधाम से मनाया गया।भगवान जन्म की खुशी में उपस्थितजनों ने जमकर नृत्य किया।उन्होंने नंद महोत्सव के बारे में विस्तृत वर्णन किया।कथास्थल पर होली गायन से उपस्थितजन झूमने लगे।कथा 23 मार्च तक चलेगी।प्रतिदिन सायं 04 बजे से 07.30 बजे तक कथा व्यासजी द्वारा श्रीमद्भागवत जी की कथा का गुणगान किया जायेगा।22 मार्च को होली मंगल मिलन का आयोजन किया जाएगा।23 मार्च को अंतिम दिन कथा पूर्वाह्न 10.00 बजे शुरू होगी तथा हवन एवं व्यास पूजन के साथ ही कथा का समापन हो जायेगा।श्रीराम मित्र मंडल नोएडा द्वारा आयोजित कथा ज्ञान यज्ञ का आयोजन श्रीहनुमान मंदिर समिति सेक्टर-20 के सहयोग से किया गया है।श्रीराम मित्र मंडल नोएडा के अध्यक्ष धर्मपाल गोयल एवं महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा ने कथा व्यासजी,मुख्य अतिथि बच्चू सिंह अपर आयुक्त मेरठ एवं सभी अतिथियों का पटका ओढ़ाकर सम्मान किया। कथा श्रवण के लिये कथा स्थल पर आयोजन समिति के चेयरमैन उमाशंकर गर्ग,कथा संयोजक अनिल गोयल,कोषाध्यक्ष राजेन्द्र गर्ग, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सत्नारायण गोयल, बजरंगलाल गुप्ता,एसएमगुप्ता,अनंत वर्मा,पवन गोयल,राजकुमार गर्ग, मुकेश गोयल,मुकेश गुप्ता,सुशीला शर्मा,रामपाल भाटी,गंगाराम यादव,विनय गुप्ता,जीसी गुप्ता,रामनिवास बंसल सहित सैकड़ों भक्तजन उपस्थित थे।

पाक्सो एक्टः दोषी बृजेंद्र को 5 वर्ष की कठोर कैद

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। साढ़े 8 वर्ष पूर्व नाबालिग लड़की के साथ हुए छेड़खानी के मामले में अपर सत्र न्यायाधीश / विशेष न्यायाधीश पाक्सो एक्ट सोनभद्र अमित वीर सिंह की अदालत ने बुधवार को सुनवाई करते हुए दोषसिद्ध पाकर दोषी बृजेंद्र को 5 वर्ष की कठोर कैद एवं 10 हजार रूपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर एक माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। जेल में बिताई अवधि सजा में समाहित की जाएगी। वहीं अर्थदंड की धनराशि में से 8 हजार रूपये पीड़िता को मिलेगी। अभियोजन पक्ष के मुताबिक करमा थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी पीड़िता की मां ने 25 जून 2015 को थाने में दी तहरीर में आरोप लगाया था कि 16 जून 2015 को नाच देखने उसकी नाबालिग लड़की गई थी। वहां पर बृजेंद्र पुत्र खुब्बू निवासी सहदेईया, थाना करमा, जिला सोनभद्र भी नाच देखने गया था। रात्रि करीब डेढ़ बजे जब उसकी नाबालिग बेटी लघु शंका करने नाच स्थल से कुछ दूर गई तो पीछे पीछे बृजेंद्र भी वहां चला गया और उसकी नाबालिग लड़की को कंधे पर उठाकर लेकर जाने लगा। जब लड़की ने शोरगुल किया तो मौके पर कई लोग आ गए तो लड़की को छोड़कर बृजेंद्र भाग गया। इस तहरीर पर पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर मामले की विवेचना किया। विवेचना के दौरान पर्याप्त सबूत मिलने पर विवेचक ने कोर्ट में छेड़खानी और पाक्सो एक्ट में चार्जशीट दाखिल किया था। मामले की सुनवाई के दौरान अदालत ने दोनों पक्षों के अधिवक्ताओं के तर्कों को सुनने, गवाहों के बयान एवं पत्रावली का अवलोकन करने पर दोषसिद्ध पाकर दोषी बृजेंद्र को 5 वर्ष की कठोर कैद एवं 10 हजार रूपये अर्थदंड की सजा सुनाई। अर्थदंड न देने पर एक माह की अतिरिक्त कैद भुगतनी होगी। जेल में बिताई अवधि सजा में समाहित की जाएगी। वहीं अर्थदंड की धनराशि में से 8 हजार रूपये पीड़िता को मिलेगी। अभियोजन पक्ष की तरफ से सरकारी वकील दिनेश कुमार अग्रहरी, सत्य प्रकाश त्रिपाठी एवं नीरज कुमार सिंह ने बहस की।

आयरलैंड के भारतवंशी पीएम लियो वराडकर ने इस्तीफा देकर सभी को चौंकाया

लंदन। आयरलैंड के भारतवंशी प्रधानमंत्री लियो वराडकर ने बुधवार को अचानक अपने पद से इस्तीफा

दे दिया। लियो वराडकर के इस्तीफे की घोषणा से पूरा देश स्तब्ध हो गया और यह सवाल खड़े होने लगे कि आखिर लियो वराडकर ने किस वजह से इस्तीफा दिया आयरलैंड के भारतवंशी प्रधानमंत्री लियो वराडकर ने बुधवार को अचानक अपने पद से इस्तीफा दे दिया। उन्होंने कहा कि अभी पद छोड़ने के मेरे कारण व्यक्तिगत और राजनीतिक हैं लेकिन मुख्य तौर पर राजनीतिकष्ठ लियो वराडकर को देश के सबसे युवा और पहले समलैंगिक प्रधानमंत्री बनने का मौका मिला। 2017 से लेकर अब तक लियो वराडकर ने दो बार ताओसीच का पद संभाला। 45 वर्षीय लियो वराडकर ने इस्तीफे के पीछे व्यक्तिगत और राजनीतिक कारणों का हवाला दिया। उन्होंने कहा लियो वराडकर ने कहा कि उनका मानना है कि अगले साल होने वाले आम चुनाव में उनकी पार्टी फाइन गेल के लिए सीटें हासिल करने के लिए एक नया नेता मुझसे बेहतर स्थिति में होगा।

जनपद में विकास एवं निर्माण कार्यों से सम्बन्धित निर्माण एजेन्सी/विभाग की सूची अविलम्ब मुख्य विकास अधिकारी कार्यालय को कराया जाये उपलब्ध

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी ने अवगत कराया है कि भारत निर्वाचन आयोग द्वारा लोक सभा सामान्य निर्वाचन,2024 की घोषणा कर दी गयी है, लोक सभा सामान्य निर्वाचन,2024 हेतु प्रभावी आचार संहिता के दृष्टिगत जनपद में विकास एवं निर्माण से सम्बन्धित जो भी कार्य जनपद स्तर पर शुरू हो चुके हैं एवं नये काम जो अभी तक शुरू नहीं हुए हैं, की अलग-अलग सूची अधिसूचना जारी होने के कारण तत्काल सूची मुख्य विकास अधिकारी सोनभद्र को सभी निर्माण एजेन्सी के नोडल अधिकारी उपलब्ध कराना सुनिश्चित करेंगे, किसी अधिकारी की सूचना समय से प्राप्त नहीं होती है तो यह समझा जायेगा कि उनकी सूचना शून्य है और तदोपरान्त आचार संहिता उल्लंघन अथवा किसी अन्य विपरीत परिस्थिति के सम्बन्धित विभाग/कार्यदायी संस्था के अधिकारी जिम्मेदार होंगे।

प्रदेश के कोषागारों में ई-पेमेन्ट लागू होने के फलस्वरूप दिये गये आवश्यक दिशा-निर्देश

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। जिलाधिकारी चन्द्र विजय सिंह ने अवगत कराया है कि समस्त आहरण वितरण वित्तीय वर्ष 2013-14 से समस्त भुगतान ई-पेमेन्ट के माध्यम से किया जा रहा है, ई-पेमेन्ट में अपनायी जाने वाली प्रक्रिया के सम्बन्ध में समय-समय पर शासनादेश निर्गत होते रहे है, प्राप्त बजट के सापेक्ष ससमय भुगतान में अपनायी जाने वाली प्रक्रिया एवं देयकों के सूचारू रूप से निस्तारण हेतु अनुदेशों का अनुपालन सुनिश्चित किया जाना है, उन्होंने बताया कि समस्त आहरण वितरण अधिकारियों द्वारा कोषागारों में समस्त बिल विलम्बतम् 25 मार्च,2024 तक अवश्य प्रस्तुत कर दिये जायें। कोषागार द्वारा 25 मार्च 2024 तक प्राप्त हुए बिलों की आवश्यक चेकिंग के बाद बिलों की पासिंग तथा ई-पेमेन्ट के माध्यम से 31 मार्च 2024 तक भुगतान हेतु अथराइजेशन किया जा सके, क्योंकि 31 मार्च 2024 तक पारित बिलों का भुगतान ई-पेमेन्ट द्वारा 31 मार्च 2024 को रात्रि 21.00 बजे तक ही भुगतान किया जा सकेगा। वित्तीय वर्ष के अन्तिम माह में प्रस्तुत देयकों को सम्बन्धित कार्यालय ध् आहरण वितरण अधिकारी द्वारा नियमानुसार तैयार कर वांछित स्वीकृति आदेश आदि प्रपत्र के साथ भुगतान हेतु प्रस्तुत किया जाय, जिससे देयकों के निस्तारण में कोई व्यवधान या विलम्ब न हो। उपरोक्त निर्देश का कड़ाई से अनुपालन किया जाये, उक्त का अनुपालन न करने तथा सामयिक आहरण के अभाव में किसी धनराशि के व्यपगत हो जाने पर सम्बन्धित आहरण वितरण अधिकारी उत्तरदायी।

बच्चों का कराया गया एक्सपोज़र विजिट

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की समझ को बेहतर

बनाने के लिए बेसिक शिक्षा विभाग के निर्देश पर करमा ब्लॉक के कक्षा 6,7 व 8 के 100 बच्चों का एक्सपोज़र विजिट कराया गया जिसमें बच्चों को सर्वप्रथम फासिल्स पार्क सलखन का भ्रमण कराया गया जिसमें बच्चों को विज्ञान एआरपी राधेश्याम पाल,एआरपी राजकुमार मौर्य,एआरपी नवीन कुमार राय, आशीष निरंजन,विज्ञान शिक्षिका रानी अनुपम सिंह, दीपक, भगवानी व अन्य शिक्षकों ने बच्चों को जीवाश्म दिखाकर उसके बारे में बताया व समझाया। बच्चों ने भी काफ़ी रुचिपूर्ण व उत्साहपूर्वक वहाँ पर जीवश्म के बारे जाना।उसके बधाई बच्चों को डाला सीमेंट फैक्ट्री का भ्रमण कराते हुए सभी बच्चों को सीमेंट बनने की प्रक्रिया के बारे में बताया व समझाया गया। इसके पश्चात् सभी बच्चों को रिहन्द बाँध का भी भ्रमण कराया गया जहाँ बच्चों को वहाँ के टेक्निशियन व शिक्षकों के द्वारा पानी से बिजली बनाने की प्रक्रिया का दिखाते व समझाते हुए उन्हें पानी से बिजली बनाने की प्रक्रिया को भी दिखाया व समझाया गया। सभी बच्चे बहुत ही जिज्ञासु और उत्साहित दिखे। इस भ्रमण कार्यक्रम में एआरपी राजकुमार मौर्य, एआरपी राधेश्याम पाल, एआरपी नवीन राय, आशीष निरंजन, अनवर हुसैन, देवेन्द्र, अभिषेक, नितेश, शिव पूजन, रानी अनुपम, भगवानी,छाया, मनीष पटेल, दीपक सहित सभी भ्रमण करने वाले बच्चे भी उपस्थित रहे।

महिला उन्नत संस्था ने मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नोएडा। नोएडा देश मे आगामी आम चुनाव मे महिलाओ की भूमिका को

लेकर सामाजिक संगठन महिला उन्नति संस्था ने मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। नोएडा सैक्टर 44 स्थित जिला कार्यालय पर आयोजित कार्यक्रम मे संस्थापक डा.राहुल वर्मा ने कहा कि देश मे लोकतंत्र है जिसमे जनता द्वारा सरकार चुनी जाती है अर्थात वोट करना हर व्यक्तित का अधिकार है जो हमे सरकार चुनने की ताकत देता है इसलिए हर व्यक्ति को मतदान अवश्य करना चाहिए और एक जिम्मेदार नागरिक का कर्तव्य निभाना चाहिए । जिलाध्यक्ष रेनू बाला शर्मा ने उपस्थित सदस्यों को शपथ दिलाते हुए कहा कि राष्ट्र निर्माण मे महिलाओ की अहम भूमिका सुनिश्चित करने के लिए सभी महिलाओ को लोकतंत्र के इस पर्व मे बढ चढकर भाग लेना चाहिए और अपना कीमती वोट एक सुशिक्षित समृद्ध विकसित राष्ट्र के निर्माण हेतु अवश्य करना चाहिए। संगठन इसके लिए मतदाता जागरूकता अभियान चलाकर चुनाव मे महिलाओ की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करेगा। कार्यक्रम मे उपाध्यक्ष रणवीर चौधरी अध्यक्ष पूजा अवाना, मीना गौतम, गुड़िया भदोरिया, रितु भारद्वाज, सुरेंद्र बिष्ट, रजनी शर्मा, शालू कश्यप, सुनीता भटनागर, आरडी शर्मा कारी सदस्य मौजूद रहे।

मतदाता जागरूकता को लेकर शिक्षको की बैठक सम्पन्न

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। मंगलवार को माह मार्च 2024 की संकुल शिक्षक बैठक का आयोजन कम्पोजिट विद्यालय जोगिया मंदिर राबर्ट्सगंज पर किया गया है। बैठक का समय 3:00 बजे से 5:00 बजे तक था। आज की संकुल बैठकसंकुल गायत्री त्रिपाठी व रंजना पांडे के स्कूलों की बैठक आयोजित की गई थी । मंगलवार की बैठक के मुख्य अतिथि एस आर जी संजय मिश्रा व विनोद कुमार थे । आज की संकुल शिक्षक बैठक में मतदाता जागरूकता हेतु संकुल में आनंद त्रिपाठी के द्वारा मतदाताओं को सम्मानित किया गया जिसमें कुछ मतदाता 18 वर्ष के थे जो प्रथम बार मतदान करने जा रहे हैं ।

पाकिस्तान को 1.1 अरब डालर की मदद देने को लेकर आईएमएफ से समझौता

इस्लामाबाद। आर्थिक संकट से जूझ रहे पाकिस्तान के लिए राहत भरी खबर है। तीन अरब डालर के बेलआउट पैकेज को लेकर अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की टीम और पाकिस्तानी अधिकारियों के बीच एक कर्मचारी स्तर समझौता हुआ है, इससे 1.1 अरब डालर की अंतिम किस्त जारी करने का रास्ता साफ हो गया है। अब इस पर आइएमएफ के कार्यकारी बोर्ड की मंजूरी मिलनी है अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आइएमएफ) की टीम नाथन पार्टर के नेतृत्व में 14 से 19 मार्च तक इस्लामाबाद में रही। टीम ने इस दौरान आइएमएफ समर्थित पाकिस्तान के आर्थिक कार्यक्रम की दूसरी और अंतिम समीक्षा की।

फूल माला रंगोली फगुआ गीतों से मना होली मिलन समारोह

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र। । उड़ान सेवा ट्रस्ट के सौजन्य से मंगलवार को सदर ब्लाक स्थित अकड़हवा तालाब के पास राम जानकी मंदिर परिसर में महिलाओं ने होली मिलन समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसमें मुख्य अतिथि मीनू चौबे के साथ विशिष्ट अतिथि पुष्पा सिंह व चित्रा जालान ओर कोमल पांडेय मौजूद रहीं। कार्यक्रम में पूजन के बाद महिलाओं एक दूसरे के गुलाल लगा कर होली की शुभकामनाएं दी।राम जानकी मंदिर परिसर में उड़ान सेवा ट्रस्ट अध्यक्ष की महिलाएं व समूह के साथ नगर के ब्यापारी वर्ग से एकत्रित हुई जिसमें महिलाओं ने होली समारोह का आयोजन किया । होली मिलन समारोह में सबसे पहले दीप प्रज्वलित और पूजन कर शुरुआत की गई। इसके बाद महिलाओं ने होली के गानों पर डांस और कविताओं भी सुनाई तो वहीं समिति की अध्यक्ष मीनू चौबे ने होली के गाना सुनाकर एक दुसरे के गुलाल

ओर फुलों की होली भी खेलीं। तो वहीं महिलाओं ने गेम, होली डांस ओर भजनों पर नृत्य कर ग्रुप डांस कर होली मिलन समारोह मनाया। इस अवसर पर कोमल पांडेय ने कहां की यह त्यौहार रंगों भरा हैं इस लिए हमें यह पर्व बिना भेदभाव के साथ मनाना चाहिए। किसी से गिला शिकवा दूर कर होली के रंग लगा ओर गले मिलकर होली पर्व मनायें। साथ हीं होली के दिन पानी की बर्बादी ना करें गुलाल का प्रयोग करें केमिकल के रंगों का इस्तेमाल न करें क्योंकि उसे चेहरे पर नुकसान होता है इसकी जिम्मेदारी हम सबको लेनी है । भाजपा महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष पुष्पा सिंह ने कहां कि हर साल होली के उपलक्ष्य में होली मिलन समारोह का आयोजन समिति करती रही हैं। उसी क्रम में इस साल भी होली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। फूल और गुलाल की होली खेली गई। हम एक दूसरे को गले मिलकर होली की बधाई व शुभकामनाएं दे रहे हैं। कार्यक्रम के अंत में कोमल लता को समिति की महिलाओं नेढोल ताशे के साथ फूल माला पहनाकर उपहार देकर स्वागत किया इसके उपरांत ढोलक बजाकर शिव पार्वती के होली पर्व गीत कव्वाली भजन गाकर लोगों का उत्साह वर्धन किया इस अवसर पर प्रीति वर्मा,सीमा पांडेय,छाया तिवारी ,निशा ,आराधना, माया, उर्मिला ,शशिकला गुड़िया त्रिपाठी ने एक से बढकर एक होली गीत और भजन प्रस्तुत किया।

प्रकाश आंबेडकर को नहीं मिल रहीं मुंह मांगी सीटें, गठबंधन में ही रंग जमा सके बाबा साहब के सियासी वारिसदार

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

मुंबई। महाराष्ट्र में वंचित बहुजन आघाड़ी के अध्यक्ष एवं बाबासाहब आंबेडकर के पौत्र प्रकाश आंबेडकर इन दिनों भारी दुविधा में दिखाई दे रहे हैं। शिवसेना (यूबीटी), राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) और कांग्रेस का गठबंधन महाविकास आघाड़ी उन्हें उतनी सीटें कतई देने को तैयार नहीं है, जितनी वह मांग रहे हैं। अब तक देखा यही गया है कि बाबासाहब के राजनीतिक वारिसदार अपनी भरपूर शक्ति होने के बावजूद बड़े राजनीतिक दलों के गठबंधन में ही अपना रंग जमा पाए है। अपना स्वतंत्र रसूख दिखाने में वह अक्षम साबित हुए हैं। महाराष्ट्र में वंचित बहुजन आघाड़ी के अध्यक्ष प्रकाश आंबेडकर की अभी महाविकास आघाड़ी में सीटों पर सहमति नहीं बनी है। वह जितनी सीटें मांग रहे हैं महाविकास आघाड़ी उन्हें उतनी सीटें नहीं देना चाह रहा है। प्रकाश आंबेडकर बाबासाहब आंबेडकर के पौत्र हैं। अन्य दलों के साथ गठबंधन में ही उनकी पार्टी की ताकत दिखती है। इस लोकसभा चुनाव में उन पर सभी की निगाहें हैं। बाबा साहब आंबेडकर ने 1952 का पहला लोकसभा चुनाव शेड्यूल कास्ट फेडरेशन नामक दल के बैनर पर लड़ा था। उनकी मृत्यु के बाद तीन अक्टूबर, 1956 को रिपब्लिकन पार्टी का गठन किया गया लेकिन जल्दी ही इस पार्टी की अनेक शाखाएं-उपशाखाएं और गुट निकलते चले गए और इसके नेता बीसी कांबले, बैरिस्टर खोब्रागडे, दादा साहब रूपवते और आरडी भंडारे आदि अपनी-अपनी सुविधानुसार अपने मार्ग तलाशते गए। अब तक चार बार 1966, 1974, 1989 और 1996 में रिपब्लिकन विचारों के नेताओं में एकता हो चुकी है। इनमें सबसे

ज्यादा फलदायी एकता 1996 की रही, जो स्वयं बाबासाहब आंबेडकर की पतने सविता आंबेडकर के प्रयासों से संभव हुई। इस एकता के बाद 28 जनवरी, 1996 को पहली बार मुंबई का वही शिवाजी पार्क वंचित समाज की उस विशाल रैली का साक्षीदार बना था, जिसमें पिछले रविवार को राहुल गांधी के नेतृत्व में आइएनडीआइए की रैली हुई। इस वंचित एकता का ही चमत्कार था कि तब की अविभाजित कांग्रेस (शरद पवार तब कांग्रेस से अलग नहीं हुए थे) से एकीकृत रिपब्लिकन पार्टी का चुनावी समझौता हुआ। समझौते में उसे चार सीटें मिलीं और वह चारों सीटें जीतने में सफल रही। रिपब्लिकन पार्टी के इतिहास में तब पहली बार एक साथ चार रिपब्लिकन नेता प्रकाश आंबेडकर, रामदास आठवले, आरएस गवई और जोगेंद्र कवाड़े एक साथ चुनकर लोकसभा में पहुंचे। दूसरी ओर कांग्रेस को भी इस गठजोड़ का भरपूर लाभ मिला। उसके भी 33 सांसद चुनकर लोकसभा में पहुंचे। और तब महाराष्ट्र की सत्ता में रहा शिवसेना-भाजपा गठबंधन सिर्फ 10 सीटों पर सिमटकर रह गया था। लेकिन एकता का मीठा स्वाद चखने के बावजूद रिपब्लिकन नेता इसे आगे नहीं बढ़ा सके। प्रकाश आंबेडकर की भारी-भरकम मांग उन्हें किसी भी दल के नजदीक जाने से रोकती रही, तो रामदास आठवले लंबे समय तक कांग्रेस के पिछलग्गू ही बने रहे। उन्हें सत्ताधारी दल के करीब रहनेवाले नेता के रूप में ही जाना जाता है। 2014 में केंद्र में भाजपा सरकार बनने के बाद आठवले कुछ समय तक शिवसेना के साथ रहे। फिर वह भाजपा के साथी बनकर फिलहाल केंद्र में मंत्री बने हुए हैं।प्रकाश आंबेडकर की अपनी ताकत का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि 2019 के लोकसभा चुनाव में वह असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी एआइएमआइएम से गठजोड़ करके चुनाव लड़े और करीब एक दर्जन सीटों पर कांग्रेस और राकांपा को हरवाने में बड़ी भूमिका निभाई। यह और बात है कि उस चुनाव में स्वयं दो स्थानों से लड़कर भी वह एक भी सीट से जीत नहीं पाए लेकिन एआइएमआइएम को तो औरंगाबाद (अब छत्रपति संभाजी महाराज नगर) की सीट जितवाने में सफल रहे ही। तब उनकी पार्टी को महाराष्ट्र में 14 प्रतिशत वोट मिले थे। जबकि राकांपा को 15.52 प्रतिशत और कांग्रेस को 16.27 प्रतिशत वोट मिले थे।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में चीन के अड़ंगे पर भारत की खरी-खरी

संयुक्त राष्ट्र। भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में विस्तार के सिलसिले में यूनाइटिंग फार कंसेंसस (यूएफसी) ग्रुप की संस्तुतियों पर कड़ी आपत्ति जताई है। इस ग्रुप में भारत विरोधी सोच रखने वाले चीन, पाकिस्तान और तुर्किये भी शामिल हैं। भारत ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में विस्तार के सिलसिले में यूनाइटिंग फार कंसेंसस (यूएफसी) ग्रुप की संस्तुतियों पर कड़ी आपत्ति जताई है। इस ग्रुप में भारत विरोधी सोच रखने वाले चीन पाकिस्तान और तुर्किये भी शामिल हैं। भारत ने कहा है कि ये संस्तुतियां संयुक्त राष्ट्र के अधिसंख्य सदस्य देशों की भावनाओं के अनुरूप नहीं हैं। भारत ने कहा है कि ये संस्तुतियां संयुक्त राष्ट्र के अधिसंख्य सदस्य देशों की भावनाओं के अनुरूप नहीं हैं। अधिसंख्य सदस्य देश सुरक्षा परिषद के स्थायी और अस्थायी सदस्यों की संख्या में बढ़ोतरी चाहते हैं। यूएफसी में इन तीन देशों के अतिरिक्त अर्जेंटीना, कनाडा, कोलंबिया, कोस्टारिका, इटली, माल्टा, मेक्सिको, दक्षिण कोरिया, सैन मारीनो और स्पेन भी हैं। इस ग्रुप में इंडोनेशिया पर्यवेक्षक के रूप में शामिल है। लेकिन चीन सुरक्षा परिषद का अकेला स्थायी सदस्य देश है। यूएफसी ने सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यों की संख्या बढ़ाए जाने का विरोध किया है। ग्रुप ने सुरक्षा परिषद की सदस्यता को बढ़ाकर 26 किए जाने की संस्तुति की है। लेकिन ये सभी अस्थायी सदस्य होंगे।

भारत का अभिन्न हिस्सा है अरुणाचल, चीन आंख भी न उठाए'; ड्रैगन को अमेरिका ने लगाई लताड़

वाशिंगटन। अमेरिका ने अरुणाचल प्रदेश सीमा मामले में भारत का साथ देते हुए चीन को कड़ी चेतावनी दी है। दरअसल, अमेरिका ने कहा कि हम अरुणाचल को भारतीय क्षेत्र के रूप में मान्यता देते हैं और वास्तविक नियंत्रण रेखा के पार के हिस्सा पर चीन के दावे को गलत हराते हैं। अमेरिका ने अरुणाचल प्रदेश को भारतीय क्षेत्र के रूप में मान्यता देते हुए चीन को फटकार लगाई है। अमेरिका ने कहा कि हम अरुणाचल को भारतीय क्षेत्र के रूप में मान्यता देते हैं और वास्तविक नियंत्रण रेखा के पार के हिस्सा पर चीन के दावे को गलत हराते हैं। चीन कई दफा अरुणाचल को अपना हिस्सा बता चुका है। बाइडन प्रशासन के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि चीन के किसी भी एकतरफा प्रयास का वो दृढ़ता से विरोध करते हैं। चीन ने हाल ही में अरुणाचल को अपना हिस्सा बताआ था और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यात्रा के बाद राज्य पर दावा किया था। इस सप्ताह की शुरुआत में, चीनी रक्षा मंत्रालय के प्रवक्ता वरिष्ठ कर्नल झांग जियाओगांग ने कहा था कि अरुणाचल चीन का हिस्सा है और बीजिंग अरुणाचल प्रदेश को कभी स्वीकार नहीं करता। इसी बयान पर अब अमेरिका ने चीन को लताड़ लगाई है।

नोटों से नहा रहा है 'शैतान', दुनियाभर में 13 दिनों में हुआ मालामाल

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। अजय देवगन की फिल्म 'शैतान' की रफ्तार बॉक्स ऑफिस पर थमने का नाम नहीं ले रही है। जानते हैं। आर्टिकल 370, लापता लेडीज और बस्तर जैसी फिल्मों का बॉक्स ऑफिस बिजनेस तो शैतान पहले ही खा चुका है, लेकिन रही है। इस मूवी ने वर्ल्डवाइड 13 दिनों में लगभग 161.57 करोड़ का बिजनेस कर लिया है और जिस रफ्तार से 'शैतान' आगे बढ़ रही

इंडिया के साथ-साथ ये मूवी दुनियाभर में भी एक नया रिकॉर्ड कायम करने की तैयारी में है। आर माधवन और अजय देवगन की सुपरनैचुरल थ्रिलर फिल्म ने 8 मार्च 2024 को सिनेमाघरों में दस्तक दी थी। की सुपरनैचुरल थ्रिलर फिल्म एर्प्पीह बॉक्स ऑफिस पर धमाकेदार बिजनेस कर रही है। इंडिया में कहर बरपा रही आर माधवन की ये फिल्म दुनियाभर में बुलेट ट्रेन की रफ्तार से आगे बढ़ रही है। शैतान ने आते ही कई बड़ी फिल्मों के बिजनेस को छीन लिया है। बुधवार को दुनियाभर में शानदार बिजनेस करने वाली इस मूवी ने 13 दिनों में कितनी कमाई की चलिए अजय देवगन की ये फिल्म 'योद्धा' को भी बख्शने के मूड में नहीं दिख रही है। 13 दिनों के अंदर ही दुनियाभर में शैतान ने कहर मचाते हुए ताबड़तोड़ बिजनेस कर डाला है। अजय देवगन ज्योतिका और आर माधवन की सुपरनैचुरल थ्रिलर फिल्म 'शैतान' पहले दिन से ही बॉक्स ऑफिस पर अपने कदम जमाए हुए है। खास बात ये है कि अजय देवगन की इस मूवी को महज इंडिया में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी दर्शकों का बहुत ही प्यार मिल रहा है यही वजह है कि फाइटर और हनु मैन के बाद ये 2024 की तीसरी ऐसी फिल्म है, जो दुनियाभर में बुलेट ट्रेन की रफ्तार से दौड़ है, उसे देखते हुए ये कहना गलत नहीं होगा कि इस वीकेंड ही फिल्म 200 करोड़ के साथ दुनियाभर में डबल सेंचुरी मार देगी। शैतान ने वर्ल्ड वाइड मंगलवार को लगभग 6.25 करोड़ का बिजनेस किया था। बुधवार को वर्ल्ड वाइड अजय देवगन और आर माधवन की फिल्म के कलेक्शन में बढ़ोतरी देखने को मिली। इस फिल्म ने सिंगल डे पर तकरीबन 11 करोड़ रुपए कमाए। ओवरसीज मार्केट में सुपरनैचुरल थ्रिलर फिल्म की कमाई 30 करोड़ के आसपास पहुंच चुकी है। आपको बता दें कि दृश्यम की तरह ही 'शैतान' में भी अजय देवगन अपनी बेटी को बचाने के लिए किसी भी हद तक गुजरते हुए नजर आए।

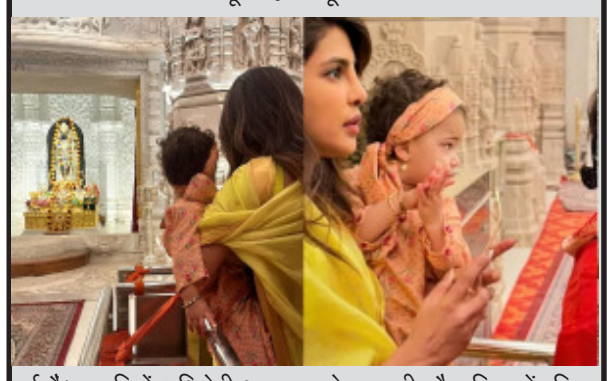

प्रियंका चोपड़ा ने शेयर कीं राम मंदिर की फोटो भगवान श्रीराम के सामने हाथ जोड़े दिखीं बेटी मालती

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। प्रियंका चोपड़ा भले ही विदेश में रहती हों और विदेशी बहू बनी हों, लेकिन अपनी संस्कृति और परंपराओं से कभी दूर नहीं हुईं। ये बात प्रियंका समय-समय पर लोगों को बताती रहती हैं। प्रियंका चोपड़ा अपनी संस्कृति और अपनी परंपराओं से दूर नहीं मीडिया पर सुबह ही एक्ट्रेस की तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे थे। वहीं अब खुद अभिनेत्री ने अपने इंस्टाग्राम पर फोटोज साझा की है। पहली तस्वीर में भगवान राम की मूर्ति और प्रिंयका मालती को गोद में लिए नजर आ रही हैं। दूसरी तस्वीर पीसी ने सेल्फी

हुई हैं। इन दिनों अभिनेत्री भारत में है और बुधवार को प्रियंका पति निक जोनस बेटी मालती और मां मधु समेत अन्य लोगों के साथ भगवान राम के दर्शन करने उनकी नगरी अयोध्या पहुंची। जहां एक्ट्रेस ने बहुत ही अच्छे से भगवान श्रीराम के दर्शन किए जिसकी कुछ फोटोज एक्ट्रेस ने शेयर की है। इन दिनों देसी गर्ल अपने पूरे परिवार के साथ भारत में हैं। बुधवार को प्रियंका पति निक जोनस, बेटी मालती और मां मधु चोपड़ा के साथ राम मंदिर के दर्शन करने अयोध्या पहुंचीं। मंदिर की इनसाइड फोटो प्रियंका ने इंस्टाग्राम पर भी साझा की हैं। राम मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा के बाद ये पहला मौका था जब प्रियंका चोपड़ा दर्शन के लिए अयोध्या पहुंची। सोशल शेयर की है, जिसमें निक जोनस, मालती और एक अन्य बच्चा नजर आ रहे है। साथ ही भगवान राम की मूर्ती भी दिखाई दे रही हैं। इस तस्वीर में प्रियंका चोपड़ा, निक जोनस, मालती मैरी और मधु चोपड़ा नजर आ रही हैं। इस दौरान मालती भगवान श्रीराम की मूर्ति को देख हाथ जोड़े नजर आ रही है। इस मौके पर प्रिंयका चोपड़ा येलो साड़ी पहने नजर आई। तो वहीं क्रीम कलर के कुर्ते पजामे में निक जोनस भी नजर आए। मधु चोपड़ा लाल साड़ी में नजर आई। प्रियंका इन दिनों बॉलीवुड और हॉलीवुड प्रोजेक्ट्स में भी व्यस्त हैं। हाल ही में प्राइम वीडियो के इवेंट में भी प्रियंका शामिल हुईं।

सद्गुरु जग्गी वासुदेव को अस्पताल में देख इमोशनल हुईं कंगना रनोट, बोलीं- 'विश्वास नहीं करना

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। बॉलीवुड एक्ट्रेस कंगना रनोट अपने बेबाक अंदाज के लिए जानी जाती हैं। वह अपनी किसी भी बात को बेझिझक सबके सामने कहते हुए नजर आती हैं, लेकिन तबीयत देख इमोशनल हो गई हैं। कंगना रनोट ने अपने सोशल मीडिया हैंडल इंस्टाग्राम और एक्स पर सद्गुरु का एक वीडियो शेयर किया और साथ ही भावुक नोट भी लिखा। सद्गुरु जग्गी वासुदेव की 17 मार्च मैंने सद्गुरु को आईसीयू बिस्तर पर लेटे हुए देखा, तो मुझे अचानक उनके अस्तित्व की नश्वरता का एहसास हुआ, इससे पहले मुझे कभी यह ख्याल नहीं आया था कि वह हमारे जैसे ही हड्डियां, खून,

हाल ही में एक्ट्रेस थोड़ी इमोशनल नजर आईं। दरअसल, आध्यात्मिक गुरु और ईशा फाउंडेशन के संस्थापक सद्गुरु जग्गी वासुदेव की हाल ही में ब्रेन सर्जरी हुई है। उनके लिए एक्ट्रेस काफी परेशान दिखीं। कंगना रनोट बॉलीवुड की जानी मानी अभिनेत्री हैं। वो अक्सर अपनी अपनी पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ को लेकर खुलकर बात करते हुए नजर आती हैं। अब हाल ही में उन्होंने एक पोस्ट किया है। ये पोस्ट उन्होंने सद्गुरु जग्गी वासुदेव की ब्रेन सर्जरी सफल होने के बाद किया है। दरअसल कंगना सद्गुरु की खराब को दिल्ली के अपोलो अस्पताल में ब्रेन सर्जरी की गई है। उनका एक वीडियो शेयर करते हुए कंगना ने अपने सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर लिखा, ठजब से मुझे राधे से इसके बारे में पता चला, मैं स्तब्ध हूं। सदगुरु ने उस असहनीय दर्द में न केवल विशाल शिवरात्रि कार्यक्रम की मेजबानी की, बल्कि किसी भी बैठक या शिखर सम्मेलन को छोड़ने से भी इनकार कर दिया। जल्दी ठीक हो जाओ, हम आपके बिना कुछ भी नहीं हैंठ। इसके बाद कंगना ने एक और पोस्ट किया, जिसमें उन्होंने लिखा कि आज जब मांस हैं। मुझे लगा कि पृथ्वी हिल गई है, आकाश ने मुझे छोड़ दिया है, मुझे लगता है कि मेरा सिर घूम रहा है, मैं इस वास्तविकता को समझ नहीं पा रही हूं। आप सभी के साथ साझा करना चाहती हूं, मैं इसे रोक नहीं पा रही हूं। बेहतर होगा कि वह ठीक हो जाए, वरना सूरज नहीं उगेगा, पृथ्वी नहीं हिलेगी। यह क्षण निर्जीव और स्थिर लटका हुआ है। बता दें कि सद्गुरु को काफी दिनों से सिरदर्द की शिकायत थी, जिसके बाद उनकी ब्रेन सर्जरी हुई है। अब उनकी सेहत में लगातार सुधार हो रहा है।

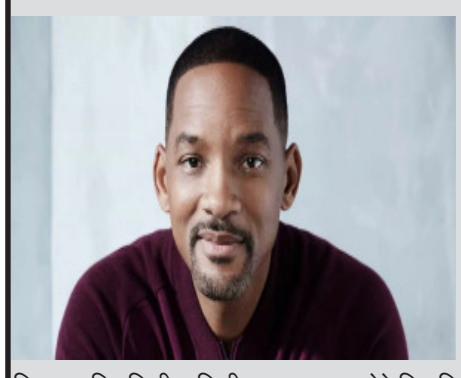

मुझे कुरान पसंद है,' रमजान के पाक महीने में हॉलीवुड सुपरस्टार विल स्मिथ ने दिया बड़ा बयान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। हॉलीवुड के चुनिंदा सुपरस्टार्स में एक्टर विल स्मिथ भी शामिल होते हैं। बैड ब्वॉय और हैंगकॉक फिल्मों से फैंस के दिलों में अपनी खास जगह बनाने वाले पाक महीनें हॉलीवुड अभिनेता की तरफ से दिए इस बयान को लेकर सुखिर्यों का बाजार काफी गर्म हैं। ऐसे में आइए जानते हैं कि उन्होंने अपने पूरे बयान में क्या कहा। दरअसल विल स्मिथ के

जिस बयान के बारे में फिलहाल चर्चा की जा रही है, वो उन्होंने बीते साल दिया था। बिग टाइम पॉडकॉस्ट को दिए इंटरव्यू में एक्टर ने कहा था- जैसा की सबको पता है कि बीते एक दो

विल आए दिन किसी न किसी वजह से चर्चा में बने रहते हैं। दुनियाभर में रमजान का पाक महीना जारी है। इस अवसर पर हॉलीवुड सुपरस्टार विल स्मिथ का एक बड़ा बयान चर्चा का विषय बना हुआ है। बैड ब्वॉय एक्टर ने कुरान को लेकर खुलकर बात की है और बताया ये पवित्र ग्रंथ पढ़ना काफी पसंद है। ये वही विल स्मिथ हैं जिन्होंने साल 2022 के अकादमी पुरस्कार के दौरान स्टैंडअप कॉमेडियन क्रिस रॉक को थप्पड़ जड़ा था। मौजूदा समय में उनके एक बयान पर खूब चर्चा हो रही है, जिसमें उन्होंने कुरान को लेकर अपनी राय रखी है। रमजान के साल मेरे लिए बिल्कुल भी आसान नहीं रहे हैं। इस दौरान मैं काफी उतार-चढ़ाव से गुजरा हूं। इससे निजात पाने के लिए मैंने आधायत्म का रास्ता अपनाया है और इस लिहाज ने मैंने कई पवित्र ग्रंथ को पढ़ा। बीते रमजान के महीने में मैंने शुरू से लेकर अंत तक कुरान को पढ़ा। मुझे कुरान की सादगी काफी पसंद आई और ये एक दम स्पष्ट है। ये मेरे जीवन के आधायत्म चरण का आगाज है, जिसके जरिए मैं प्यार भरे दिल को विकसित करने की कोशिश कर रहा हूं। इस तरह से करीब एक साल पहले विल स्मिथ ने मुस्लिम धर्म के पवित्र ग्रंथ कुरान को लेकर अपनी प्रतिक्रिया दी।

अनिल कपूर और रानी मुखर्जी की 'नायक' का बनेगा सीक्वल, 'पठान' डायरेक्टर सिद्धार्थ आनंद ने उठाया जिम्मा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
मुंबई। अब जब वर्तमान में हिंदी सिनेमा में सीक्वल व फ्रेंचाइजी जिम्मेदारी सिद्धार्थ आनंद ने उठाई है। अनिल कपूर, रानी मुखर्जी और अमरीश पुरी अभिनीत इस फिल्म सीक्वल पर काम करने जा रहे हैं। मूल फिल्म की तरह सीक्वल फिल्म को भी राजनीतिक पृष्ठभूमि से

फिल्मों का दौर चल ही रहा है, तो बहती गंगा में हाथ धोते हुए कई फिल्मकार सीक्वल फिल्में बना रहे है। साल 2001 में प्रदर्शित हुई फिल्म 'नायक : द रीयल हीरो' भले ही टिकट खिड़की पर ब्लॉकबस्टर फिल्म न साबित हुई हो, लेकिन रिलीज के बाद लोगों ने टीवी पर इसे खूब देखा। बॉलीवुड में इन दिनों सीक्वल फिल्मों की लाइन लगी हुई है। अब तक कई फिल्म का सीक्वल बन चुका है और कई पाइप लाइन में हैं। हाल ही में प्राइम वीडियो ने भी कई सीक्वल फिल्मों का एलान किया। वहीं अब अनिल कपूर और रानी मुखर्जी स्टारर नायक का भी सीक्वल बनने जा रहा है जिसकी की भी अब सीक्वल बनने जा रही है। इस फिल्म का निर्माण फाइटर और पठान फिल्मों के निर्देशक सिद्धार्थ आनंद कर रहे हैं। सिनेमाई गलियारों की रिपोर्ट्स के अनुसार, सिद्धार्थ ने इस फिल्म को निर्देशित करने की जिम्मेदारी निर्देशक मिलन लुथरिया को सौंपी है। नायक में अनिल कपूर ने एक न्यूज रिपोर्टर का किरदार निभाया था, जिसे एक दिन का मुख्यमंत्री बनने का मौका मिलता है। फिल्म में पॉलिटिक्स, करप्शन से लेकर क्राइम तक, कई एलिमेंट्स का बैलेंस शामिल था। नायक आज भी एंटरटेन करने का पूरा दम रखती है, यही वजह है कि मेकर्स नायक के बाद इसके जोड़ते हुए कमशिर्यल मसाला फिल्म बनाने की योजना है। फिल्म का कहानी लाक कर ली गई है और फिलहाल लेखक रजत अरोड़ा इसका स्क्रीनप्ले तैयार कर रहे हैं। सिद्धार्थ ने लेखकों की टीम से राजनीति और एक्शन के साथ फिल्म में खूब डायलॉग बाजी भी रखने का निर्देश दिया है। नायक के सीक्वल में निर्माता मूल फिल्म के कलाकारों को ही दोहराएंगे, या किसी नए कलाकार को कास्ट करेंगे, इस बारे में अभी कोई जानकारी सामने नहीं आई है, लेकिन इतना तो तय है कि सिद्धार्थ और मिलन इस फिल्म को किसी बड़े सितारे के साथ ही बनाएंगे।

आखिरकार 'योद्धा' ने ली राहत भरी सांस, बुधवार को अचानक बढ़ा इतना बिजनेस

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। सिद्धार्थ मल्होत्रा और दिशा पाटनी की फिल्म 'योद्धा' की शुरुआत काफी धीमी हुई थी। सागर आंबरे और पुष्कर ओझा के निर्देशन में बनी इस देशभक्ति मौजूदगी में सिद्धार्थ मल्होत्रा (एर्प्पी ईर्त्र्दी) की मूवी को एक मौका नहीं मिल रहा था कि ये फिल्म अच्छा बिजनेस कर सके। अब हाल ही में फिल्म योद्धा ने शैतान को ये बता दिया है कि वह इतनी जल्दी 2.25 करोड़ के आसपास का डोमेस्टिक बॉक्स ऑफिस पर कलेक्शन करने वाली योद्धा ने बुधवार को डबल यानी कि 4.29 करोड़ का सिंगल डे बिजनेस किया। सिद्धार्थ मल्होत्रा की

फिल्म को रिलीज हुए कल एक हफ्ता पूरा हो जाएगा। योद्धा ने पहले दिन लगभग 4.1 करोड़ से शुरुआत की थी, जिसे देखते हुए यही लग रहा था कि ये मूवी जल्द ही अपना दम तोड़ सकती है।की फिल्म योद्धा को सिनेमाघरों में रिलीज हुए एक हफ्ता पूरा होने वाला है। दिशा पाटनी और सिद्धार्थ मल्होत्रा स्टारर इस फिल्म का वीकेंड के बाद दो दिन सोमवार और मंगलवार को घरेलू बॉक्स ऑफिस पर बिजनेस डामाडोल हो गया था। हालांकि अब बुधवार को योद्धा ने एक राहत भरी सांस ली है क्योंकि फिल्म के कलेक्शन में उछाल आया। शैतान की बॉक्स ऑफिस के खेल में पस्त नहीं होने वाला है। बुधवार को योद्धा के कलेक्शन में घरेलू बॉक्स ऑफिस पर अचानक ही काफी उछाल देखने को मिला। सिद्धार्थ मल्होत्रा-दिशा पाटनी और राशि खनन स्टारर योद्धा का पहला वीकेंड घरेलू बॉक्स ऑफिस पर काफी अच्छा बीता, लेकिन जल्द ही फिल्म का बॉक्स ऑफिस पर बिजनेस जिस तरह डामाडोल हुआ उसे देखकर एक्टर्स के फैंस काफी निराश हो गए। सोमवार और मंगलवार दो दिन 'योद्धा' का बिजनेस लगातार गिरा, लेकिन बुधवार को अचानक ही इसमें बढ़ोतरी हुई। सैकनलिक.कॉम की रिपोर्ट्स के मुताबिक, मंगलवार को पेट्रोटिक फिल्म 'योद्धा' के मेकर्स ने बुधवार को जिस तरह से फिल्म के कलेक्शन में उछाल आया है, उसके बाद राहत की सांस जरूर भरी होगी। इस फिल्म ने घरेलू बॉक्स ऑफिस पर अब तक टोटल 25.54 करोड़ का नेट कलेक्शन किया है। जो सिद्धार्थ मल्होत्रा के स्टारडम को देखते हुए फिलहाल काफी कम है। वर्ल्डवाइड भी फिल्म की गति धीमी है और अब तक दुनियाभर में योद्धा महज 31.12 करोड़ का ही बिजनेस कर पाई है। वर्किंग डे बुधवार को सिद्धार्थ मल्होत्रा की फिल्म का कलेक्शन बढ़ने के बाद मेकर्स के अंदर एक उम्मीद की किरण जागी है।

होला से पहले ओटीटी पर बिखरेंगे मनोरंजन के चटख रंग, फाइटर और 'ए वतन मेरे वतन' समेत आ रहीं ये फिल्में और सीरीज

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। होली के त्योहार में अब ज्यादा वक्त नहीं बचा है। 25 मार्च को देशभर में होली के रंग बिखरेंगे। उससे पहले ओटीटी प्लेटफॉर्म्स ने भी त्योहार की मस्ती बढ़ाने के लिए मनोरंजन का पूरा इंतजाम कर लिया है। होली वीक में कई चर्चित फिल्में और सीरीज आ रही हैं रंगों के पर्व प्दत् की महक फिजा में महसूस की जा सकती है। मनोरंजन इंटस्ट्री ने भी इस त्योहार की रौनक बढ़ाने की पूरी तैयारी कर रही है। ऋतिक रोशन की इफ़्ी होली वीक में ओटीटी पर आ रही है तो सारा अली खान की ए वतन मेरे वतन ओटीटी पर रिलीज हो रही है। इनके अलावा कुछ अन्य भाषाओं की फिल्में भी मनोरंजन के लिए आ रही हैं इनमें ऋतिक रोशन की 'फाइटर' और सारा अली खान की 'ए वतन मेरे वतन' शामिल हैं। इसके अलावा ऑस्कर अवॉर्ड विनिंग फिल्में भी होली वीक का बोनस रहेंगी। होली वीकेंड की लम्बी छुट्टियों में सिनेमाघर जाने का मन नहीं है तो ओटीटी प्लेटफॉर्म भी बोर होने का मौका नहीं देंगे। मलयालम क्राइम थ्रिलर फिल्म अब्राहम ओजलर में जयराम, ममूटी मुख्य किरदारों में हैं। 11 जनवरी को सिनेमाघरों में रिलीज हुई फिल्म को अच्छे रिव्यूज मिले थे। फिल्म हिंदी में भी स्ट्रीम की जा सकती है। सारा अली खान की मुख्य भूमिका वाली फिल्म क्रांतिकारी उषा मेहता की बायोपिक है, जिन्होंने सीक्रेट रेडियो चलाकर ब्रिटिश हुकूमत की नींद उड़ा दी थी। इमरान हाशमी ने फिल्म में कैमियो किया है। फिल्म सीधे ओटीटी प्लेटफॉर्म पर रिलीज की जा रही है। ऋतिक रोशन और दीपिका पादुकोण की फिल्म 25 जनवरी को सिनेमाघरों में रिलीज हुई थी और अब ओटीटी पर उतर रही है। फिल्म का निर्देशन सिद्धार्थ आनंद ने किया था। ऑस्कर अवॉर्ड में तहलका मचाने वाली फिल्म का निर्देशन क्रिस्टोफर नोलन ने किया है। किलियन मर्फी ने लीड रोल निभाया है। फिल्म को सात ऑस्कर अवॉर्ड्स मिले।

ओटीटी पर भी कोहराम मचाएगी सूर्या की 'कंगुवा', जानिए कब और कहां होगी स्ट्रीम

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। साउथ सुपरस्टार सूर्या की अपकमिंग फिल्म कंगुवा को लेकर लंबे समय से चर्चा का बाजार काफी गर्म चल रहा है। 19 मार्च का दिन

इस मूवी के लिए बेहद खास दिन है। आज कंगुवा का टीजर रिलीज हुआ है, जो इस समय चर्चाओं का विषय बन चुका है। साउथ सिनेमा के मशहूर डायरेक्टर शिवा के निर्देशन में बनने वाली ड्रामा पीरियड फिल्म कंगुवा को लेकर इस समय खूब चर्चा हो रही है। 19 मार्च यानी आज इस मूवी की मोस्ट अवेटेड टीजर रिलीज किया गया है। इसके साथ ही अब सूर्या की कंगुवा की ओटीटी रिलीज को लेकर बड़ी जानकारी दे गई है। आइए जानते हैं कि ये फिल्म कहां स्ट्रीम होगी। इस बीच कंगुवा की ओटीटी रिलीज डेट को लेकर बड़ी अनाउंसमेंट कर दी गई है। यानी सिनेमाघरों के बाद हर फिल्म की तरह सूर्या की कंगुवा की भी डिजिटल दुनिया में धमाल मचाएगी। ऐसे में आइए जानते हैं कि इस मूवी को किस ओटीटी प्लेटफॉर्म पर रिलीज किया जाएगा। अभी कंगुवा की ओटीटी रिलीज का एलान नहीं किया गया है। लेकिन इसके ओटीटी राइट्स को लेकर बड़ी जानकारी सामने आ गई है। दरअसल मंगलवार को मशहूर ओटीटी प्लेटफॉर्म अमेजन प्राइम वीडियो ने इस बात का एलान किया है।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा. दीपक अरोरा द्वारा श्री आधुनिक प्रिन्टर्स एण्ड पैकेजर्स प्रा.लि. 1-मिर्जापुर रोड नैनी प्रयागराज उ.प्र. 211008 से मुद्रित एवं आधुनिक समाचार पब्लिसिंग हाउस सी 41 यूपीएसआईडीसी नैनी प्रयागराज 211010 (उ.प्र.) से प्रकाशित
सम्पादक/प्रकाशक
डा. पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोट:- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।